ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

वैशाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष ९ अंक ९ मई 2016

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ॥
सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा ॥१॥
बाबा देहि वसा सच गावा ॥ जा ते सहजे सहजि समावा ॥१॥ रहाउ ॥
बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई सगल विकारा ॥
इहु फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इहु संसारा ॥२॥
इंद्री धातु सबल कहीअत है इंद्री किस ते होई ॥
आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै कोई ॥३॥
गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥
जो तिसु भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥४॥
भणति नानकु लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना ॥
तासु तासु धरम राइ जपतु है पए सचे की सरना ॥५॥ *(पन्ना ९९३)*

मारू राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में श्री गुरु अमरदास जी प्रभु-प्यारों की संगत की महिमा का बखान कर रहे हैं। गुरु जी प्रभु के आगे समर्पण-भावना से आम जन को उपदेश दे रहे हैं कि हे प्रभु! आप मुझे जहां बिठाओगे मैं वहीं पर बैठा रहूंगा। जहां आप मुझे भेजोगे मैं वहीं जाऊंगा अर्थात् हर समय प्रभु-हुक्म में रहने का उपदेश है। सारी सृष्टि में मुझे एक आप ही पातशाह (राजा) दिखाई दे रहे हो। आपकी सर्वव्यापकता के कारण सारे स्थान मुझे पवित्र दिखाई दे रहे हैं। प्रभु के आगे गुरु जी याचना कर रहे हैं कि हे प्रभु! मैं हमेशा आपकी शरण में रहूं, जिसकी बदौलत मैं सदा सहज में रहूं, आत्मिक अडोलता में रहूं।

श्री गुरु अमरदास जी आगे फरमान कर रहे हैं कि अहं के कारण मनुष्य किसी को अच्छा और किसी को बुरा समझता है। गुरु जी इसे भी प्रभु-हुक्म ही मान रहे हैं अर्थात् यह हुक्म भी प्रभु का ही है जो सारे संसार में काम कर रहा है। सारे संसार में यह बात प्रचलित है कि इंद्री के कारण सारी हलचल मची हुई है। विरले जन समझते हैं कि यह भी प्रभु का ही हुक्म है। संसार का सारा खेल, सारा घटनाक्रम प्रभु-हुक्म में हो रहा है। प्रभु-प्यारों की संगत करने से सारी दुविधाएं खत्म हो जाती हैं, परमात्मा के साथ ध्यान जुड़ जाता है। फिर संसार में जो घटित हो रहा है वह अच्छा लगने लगता है; आत्मिक मृत्यु वाला फंदा खत्म हो जाता है अर्थात् जीव वास्तव में आत्मिक जीवन जीने लगता है। प्रभु-कृपा से जीव के मन का अभिमान खत्म हो जाता है। फिर प्रभु-दरगाह में ऐसे जीव से उसके कर्मों का लेखा-जोखा नहीं मांगा जाता अर्थात् ऐसा जीव मन से निर्मल होकर प्रभु-हुक्म को सर्वोपरि मानने लग जाता है। ऐसा जीव सदा प्रभु की शरण में रहता है और प्रभु की शरण में तो धर्म राज भी है।

कहने से तात्पर्य, प्रभु की रज़ा में राज़ी रहना प्रभु-प्यारों की संगत भली प्रकार से सिखाती है। ऐसी शिक्षा प्राप्त जीव सदा प्रभु-हुक्म में रहता हुआ जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है।

आओ! शताब्दियों द्वारा प्रचार की नई राहें सृजित करें

जून, २०१६ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की ३०० वर्षीय शहीदी शताब्दी तथा जनवरी, २०१७ ई. में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ३५० वर्षीय प्रकाश पर्व आ रहा है। इन शताब्दियों को लेकर सिक्ख संगत में भारी उत्साह पाया जा रहा है। वह समय सौभाग्यशाली होता है जब शताब्दियों के जरिए कौम के वारिसों को गुरबाणी, अपनी अमीर विरासत तथा लासानी इतिहास से अवगत करवाने का मौका मिलता है। सिक्ख पंथ की सिरमौर नुमाइंदा जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी संगत के सहयोग से अब तक कई शताब्दियां मना चुकी है। इन शताब्दियों के द्वारा विश्व भर में सिक्खी के प्रचार-प्रसार को बहुत बल मिला है। गत दिनों विदेशों में बसते सिक्खों की कोशिश एवं मेलजोल के कारण अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड आदि देशों में सिक्खों द्वारा एवं सरकारी रूप में भी खालसा सृजना दिवस मनाया जाना, कनाडा के शहर बरैंपटन में खालसाई निशान साहिब झुलाया जाना, न्यूज़ीलैंड एयर लाइन के उड़ान भरने से पहले जहाज़ के करू सदस्यों द्वारा सिक्ख मुसाफिरों को खालसा पंथ के सृजना दिवस (वैसाखी) की मुबारकबाद देना आदि सिक्ख समुदाय के लिए बहुत गौरवमयी बात है।

आने वाली शताब्दियों में जहां शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने गुरमति विचारधारा को घर-घर पहुंचाने के लिए कार्यक्रमों की रूप-रेखा तैयार करनी आरंभ कर दी है, वहीं सिक्खी के प्रचार-प्रसार के साथ जुड़ी देश-विदेश की पंथक जत्थेबंदियां भी अपना-अपना योगदान डालेंगी। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय तथा अन्य शैक्षणिक संस्थाएं भी इसके बारे में अपने-अपने ढंग से प्रोग्राम बनाएंगी। इन शताब्दियों को मनाने का सदका विश्व भर में सिक्खों के अस्तित्व तथा सिक्खी की पहचान की जानकारी देने का सुनहरी मौका मिला है।

हम गुरमति ज्ञान के माध्यम से देश-विदेश की संगत के समक्ष निवेदन करना चाहते हैं कि इन शताब्दियों को रिवायती ढंग के साथ-साथ इस ढंग से भी मनाया जाए जिससे सिक्खी का सर्वपक्षीय प्रचार-प्रसार फले-फूले, पंथक एकता मज़बूत हो तथा सिक्खी की पहचान की समस्या जैसी चुनौतियों का कोई सार्थक हल ढूंढा जा सके।

नौजवान किसी भी कौम की रीढ़ की हड्डी होते हैं, इसलिए अपने लासानी इतिहास से अवगत करवाने हेतु इन शताब्दियों में नौजवान वर्ग की ज्यादा से ज्यादा शमूलियत करवाई जाए। स्कूलों-कॉलेजों में शताब्दियों से सम्बंधित विशेष लेक्चरों की मुहिम चलाई जाए। गांवों, शहरों तथा कसबों में प्रचारक लहर चलाई जाए; सेमीनर, कैंप आदि आयोजित किए जाएं। शताब्दियों से सम्बंधित शख़्सियतों के बारे में उच्च कोटि का साहित्य अधिक से अधिक तैयार करवाकर बांटा जाए। शताब्दियों से सम्बंधित संदेश को विश्व भर में पहुंचाने के लिए रेडियो, टी. वी. तक इन प्रोग्रामों की पहुंच हो। सबसे अहम बात यह है कि इन शताब्दियों को मनाते हुए प्रत्येक नानक-

नाम-लेवा सिक्ख यह प्रण करे कि हम नशों, पतितता, कन्या-भ्रूण-हत्या तथा दहेज़ आदि अलामतों को खत्म करने हेतु सदैव तत्पर रहेंगे। सिक्खी स्वरूप से किनारा कर रहे नौजवानों के माता-पिता इसके प्रति अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी समझकर अपने घरों में गुरमति का ऐसा माहौल सृजित करने हेतु वचनबद्ध हों ताकि बच्चे पतितता को त्यागकर बाणी एवं बाणे के धारणी बन सकें। बच्चों को गुरमति की शिक्षा देने में माताएं सबसे अहम भूमिका निभा सकती हैं। इन शताब्दियों को मनाते हुए माताएं पतितता एवं कन्या-भ्रूण-हत्या जैसी अलामतों के विरुद्ध लहर बनकर सामने आएं। हम 'गुरमति ज्ञान' के सुहृद पाठकों, लेखकों को भी निवेदन करते हैं कि वे भी शताब्दियों के साथ-साथ वर्ष भर में आने वाले गुरुपर्व तथा ऐतिहासिक दिवस मनाने सम्बंधी अपने बहुमूल्य सुझाव हमें लिखकर भेजें ताकि गुरमति प्रचार की ज्यादा से ज्यादा संभावनाएं हासिल की जा सकें।

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥
सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥
जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥१॥
हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥
तूं विसरहि तदि ही मरि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
तिन तूं विसरहि जि तुधु आपि भुलाए ॥
तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥
मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥२॥
जिन इक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥
जिन इक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ॥
गुरमती हरि नामि समाए ॥३॥
जिना पोतै पुंनु से गिआन बीचारी ॥
जिना पोतै पुंनु तिन हउमै मारी ॥
नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥४॥

(पन्ना १५९)

श्री गुरु अमरदास जी की आध्यात्मिक विचारधारा

*-डॉ. रतन सिंघ**

श्री गुरु अमरदास जी की आध्यात्मिक विचारधारा का मूलाधार श्री गुरु नानक देव जी की आध्यात्मिक विचारधारा है। श्री गुरु नानक देव जी अपने युग के अनुभवी आस्तिक साधक थे, जिन्होंने पंजाब में भक्ति-आंदोलन का प्रचलन कर आध्यात्मिकता के वास्तविक मार्ग से दूर हट चुके जिज्ञासुओं को पुन: सन्मार्ग पर लाने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने ब्रह्म (प्रभु) के प्रति अपनी भावना प्रकट करते हुए समस्त जगत को परम सत्ता का एक खेल-मात्र माना है और अवतारवादी दृष्टिकोण का यत्र-तत्र खंडन किया है। पंजाब एवं भारत में श्री गुरु नानक देव जी की आध्यात्मिक विचारधारा अध्यात्म-जगत में कोई अकस्मात घटना नहीं थी, उनसे पूर्व भारत एवं सभी देशों में अनेक प्रकार की आध्यात्मिक विचारधाराएं प्रचलित हो चुकी थीं मगर प्रभाव के रूप में देखा जाए तो श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा सबसे अधिक प्रेरणादायक एवं असरदायक सिद्ध हुईं। भारत में मुसलमानों के आगमन से भारतीय एवं सामी संस्कृतियों और धार्मिक मान्यताओं के परस्पर मिलन के द्वारा एक दूसरे पर प्रभावों की क्रिया-प्रतिक्रिया हुई और इस प्रकार विचार-जगत में सर्वप्रथम एक अद्भुत परंतु गंभीर वातावरण उत्पन्न हो गया। ऐसे संक्रांति काल में ही श्री गुरु नानक देव जी का अवतरण हुआ।

श्री गुरु नानक देव जी अपने अतीत एवं वर्तमान के प्रति किसी प्रकार की घृणा का भाव मन में नहीं रखते थे। हां, इतना अवश्य है कि उन्हें वे पाखंड एवं वाह्याडंबर तथा निस्सार अनुष्ठान एवं रीतियां पसंद नहीं थीं, जिनसे मानव का वास्तविक विकास अवरुद्ध होता हो। उन्होंने सभी धर्मों के श्रेष्ठ, सृजनात्मक और मिथ्या बंधन को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले विचारों को आत्मसात् कर और उनसे अपनी चिंतन-धारा एवं अनुभूति का सामंजस्य स्थापित कर जन-कल्याण के लिए प्रस्तुत किया। वस्तुत: श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रस्तुत किए सिद्धांतों के पीछे उनकी समूची जीवनानुभूति, गंभीर चिंतन, गहन अध्ययन और विशाल दृष्टिकोण अपनी भूमिका निभा रहे थे। इस विशाल समन्ववादी प्रवृत्ति की शिला पर ही श्री गुरु नानक देव जी की आध्यात्मिक विचारधारा के भवन का निर्माण हुआ और यही विचारधारा श्री गुरु अमरदास जी को (श्री गुरु अंगद देव जी से) बपौती के रूप में प्राप्त हुई।

परमात्मा : श्री गुरु अमरदास जी ने परम सत्ता को निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में देखते हुए उसे अकथनीय, अगोचर, अलक्ष्य, अगम और निराकार विशेषणों से सम्बोधित किया है :

तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥
तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥
(पन्ना ५८५)

यह विषवत् संसार प्रभु का रूप है और उसी के द्वारा प्रभु के स्वरूप का बोध हो रहा है। गुरु की कृपा के द्वारा ही उस रहस्य को समझा जा सकता है कि सर्वत्र एक ब्रह्म ही

४१९३, अर्बन अस्टेट, फेस-II , पटियाला-१४७००१

विद्यमान है :

एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ (पन्ना ९२२)

इस सृष्टि के संचालन, पालन, रक्षण एवं लय की शक्ति केवल परमात्मा के पास है। वही इसको पुन: उत्पन्न करता एवं नया जीवन प्रदान करता है। उस सर्वज्ञ शक्ति को श्री गुरु अमरदास जी ने राम, हरि, मुरारि, मधुसूदन, बनवारी, जगदीश, जगन्नाथ, गोसाईं, गोविंद, जगजीवन, नारायण, बासुदेव, गोपाल, निरंजन, मोहन आदि अभिधान दिए हैं। लगभग ये सभी अभिधान श्री गुरु नानक साहिब की बाणी में भी उपलब्ध हैं। 'सच' अथवा 'सत्य नाम' को गुरु जी ने अधिक निष्ठा एवं तल्लीनता से अपनी बाणी में प्रयुक्त किया है। बहुदेववाद और अवतारवाद का भी गुरु जी ने खंडन किया है।

मनुष्य : मनुष्य को श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में अन्य जीवों की अपेक्षा बहुत अधिक महत्त्व एवं गौरव प्रदान किया गया है। यही सर्वश्रेष्ठ जन्म है और परमात्मा की प्राप्ति अथवा अपने मूल स्वरूप में पुन: समाई इसी जन्म में संभव हो सकती है, शेष जन्म केवल प्रारब्ध-कर्मों का फल भोगने के लिए बने हैं। मनुष्य शरीर को उत्तम माना गया है। इसी में परमात्मा का प्रकाश संभव है। यह वस्तुत: आत्मा का वाहन है। इस शरीर की विशिष्टता एवं इसके अंदर विद्यमान वस्तुओं का गुरु जी ने रुचिपूर्ण विवरण दिया है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ . .
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ॥
इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा ॥
इसु काइआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा ॥ (पन्ना ७५४)

इस काया (शरीर) में आत्मा रूपी पक्षी का निवास है। जीव को मुक्ति तभी मिल सकती है जब वह नाम-रूपी अमृत का सेवन करे। ऐसा करने से उसका गुरु-शबद में स्थायी निवास हो जाएगा :

काइआ बिरखु पंखी विचि वासा ॥
अंम्रितु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥
उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइआ ॥ (पन्ना १०६८)

यह शरीर नश्वर है। इसमें स्थित आत्मा ही स्थायी और अनश्वर है। यह शरीर वास्तव में माया का 'पुतला' एवं त्रिगुणात्मक है। परमात्मा की कृपा से ही यह शुद्ध और सफल हो सकता है, अन्यथा इसका अशुद्ध रहना स्वाभाविक है :

-इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥
आवणु जाणा जंमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥ (पन्ना ३१)
-इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ (पन्ना ६००)
-तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ (पन्ना ११२)

मन : शरीर में स्थित मन अत्यंत शक्तिशाली है। श्री गुरु नानक देव जी ने इसे वश में करने को जगत् वश में करने के समान माना है। मन के भी दो पहलू हैं-- ज्योतिमय मन एवं अंधकारमय मन। वासनाओं के वशीभूत मन को अंधकारमय

मन की संज्ञा दी जाएगी और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानने वाले मन को प्रकाशमय अथवा ज्योतिमय मन कहा जाता है। मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में मन का विशेष योगदान है। इसके निर्मल रहने पर ही मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। मन की स्थिति और महत्त्व को समझते हुए ही मन को संबोधन कर उसे उसकी वास्तविकता से जानकार किया है और सही मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा दी है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥
गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥
मन सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥
इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥ *(पन्ना ४४१)*

सृष्टि : श्री गुरु अमरदास जी ने सृष्टि की सृजना भी परमात्मा के द्वारा मानी है। संसार का मायावी प्रपंच भी प्रभु की इच्छा के अनुसार ही अस्तित्व ग्रहण करता है। सृष्टि-पूर्वावस्था का चित्रण करते हुए गुरु साहिब ने माना है कि तब आकाश, पाताल, तीन लोक आदि किसी की उत्पत्ति नहीं हुई थी। उस समय मात्र निराकार ब्रह्म ही था :

तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥
तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥
(पन्ना ५०९)

इस सृष्टि की रचना परमात्मा ने केवल एक खेल के रूप में की है। शबद, नाम, हुक्म आदि के द्वारा इसकी रचना-प्रक्रिया का आरंभ हुआ है और इस सब की रचना कर इसका नियंत्रणाधिकार अपने पास ही रखा है। यह संसार पारमार्थिक दृष्टि से मिथ्या है, परंतु व्यवहारिक दृष्टि से यह संसार सत्य है क्योंकि व्यवहार में इसके अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता।

माया : इस संसार में प्राणियों को भ्रमित करने के लिए प्रभु ने स्वयं माया की रचना की है। इस माया के प्रपंच में फंस कर मनुष्य अपने वास्तविक मार्ग से हट जाता है और अपने आध्यात्मिक भविष्य को पूर्णत: नष्ट कर लेता है। इससे बचना ही श्रेयस्कर है :

माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥
मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥ *(पन्ना ६७)*

इस माया का प्रभाव उन्हीं व्यक्तियों पर पड़ता है जो परमात्मा अथवा गुरु को भुला कर वासनाओं के जाल में फंस जाते हैं, परंतु भक्त-साधकों के प्रति यह दया-भाव से रह कर उनकी सेवा में संलग्न रहती है :

माइआ दासी भगता की कार कमावै ॥ (पन्ना २३१)

मुक्ति : जागतिक प्रपंच से बचना वास्तव में अपने शुद्ध रूप में विलीनता है। यही अवस्था मुक्ति की अवस्था है। इसको श्री गुरु अमरदास जी ने *"जोती जोति मिलाई"* का नाम दिया है। इसके लिए जिज्ञासु को कौन-सा साधन अपनाना चाहिए, तत्सम्बंधी श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में सविस्तार विचार हुआ है। स्मरण रहे कि गुरु जी ने साधना की किसी भी प्राचीन पद्धति का खंडन नहीं किया, खंडन केवल उनके रूढ़ रूप का है। उनके सहजीकृत रूप को ग्रहण करने में गुरु जी को कोई संकोच नहीं है। ज्ञान, कर्म, योग और भक्ति के भावीकृत रूप को ग्रहण करने के अतिरिक्त गुरु जी ने प्रेमाभक्ति को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। कलयुग में भवसागर से तरने का यही मात्र उपाय है।

('गुरु अमरदास रचनावली' से धन्यवाद सहित)

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में सामाजिक समस्याओं का समाधान

*-बीबी परमजीत कौर**

श्री गुरु अमरदास जी मध्य युग के महत्त्वपूर्ण धर्म-साधक, बाणीकार, भक्त और समाज-सुधारक थे। श्री गुरु अमरदास जी सिक्ख धर्म के तृतीय गुरु थे। ६२ वर्ष की आयु में आप का परिचय द्वितीय गुरु श्री गुरु अंगद देव जी के साथ हुआ। उनके विचारों और बाणी का आप पर इतना गहन प्रभाव पड़ा कि आपने स्वयं को वहीं पर समर्पित कर दिया। तभी से श्री गुरु अमरदास जी ने सच्ची आध्यात्मिक जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए अपने कदम आगे बढ़ाए।

सेवा उनके जीवन-दर्शन का आधार-तत्व थी, जिसे वे वृद्ध आयु में भी निभाते रहे। उन्होंने अपनी बाणी के द्वारा जो संदेश दिया, उसने समूची मानवता, पद-दलित एवं दुखित जनता को सांत्वना प्रदान की, माया युक्त संसार में माया मुक्त होकर विचरण करने की प्रेरणा दी, भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए उत्साहित किया।

श्री गुरु अमरदास जी अपूर्व सुधारवादी थे। उनका सुधारवाद धर्म के क्षेत्र से समाज के क्षेत्र तक व्यापक था। इस सुधारवाद में लोक-हित की भावना निहित थी। सती-प्रथा, पर्दा-प्रथा को रोकने और अंतरजातीय विवाह, विधवा-विवाह आदि को स्वीकृति देना उनके महत् कार्य थे। धर्म के क्षेत्र में उन्होंने तीर्थ-यात्रा के चक्कर में पड़ी मानवता को आत्म तीर्थ में 'स्नान' करने के लिए प्रेरित किया और कर्मकांडीय तथा फोकट साधना-पद्धतियों को त्याग कर प्रेम द्वारा संपन्न होने वाली भक्ति को अपनाने के लिए प्रेरणा दी।

मानवीय जीवन में कर्म मार्ग का विशेष स्थान एवं महत्त्व है। कर्म करने की प्रवृत्ति जीवन भर मनुष्य के साथ-साथ चलती है। यह अधिक प्राचीन भक्ति-मार्ग कहा जा सकता है। संसार में अध्यात्म कर्म भी दो प्रकार के माने गए हैं : कर्मकांड प्रधान कर्म और निष्काम कर्म। कर्मकांड से भाव साधना सम्बंधी वे बाहरी क्रियाएं हैं जो शनै:-शनै: धर्म के वास्तविक स्वरूप को पीछे हटा कर अपनी प्रधानता स्थापित कर लेती हैं। प्रेम-भावना से शून्य सभी कर्म व्यर्थ के प्रयत्न हैं। इनका रूढ़ रूप ही कर्म कांड है। श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में सर्वाधिक विरोध कर्मकांड प्रधान कर्म का हुआ है। मध्य युग के सभी संत-महापुरुष देख चुके थे कि कर्मकांड ही मानवता को वास्तविक मार्ग से बहुत दूर ले जा रहे हैं। इनकी स्थापना सभी धर्मों की मान्यताओं को निस्सार बना चुकी थी और धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में अमर्यादा और विशृंखलता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में इन कर्मों की निस्सारता का विस्तार सहित उल्लेख एवं खंडन हुआ है। श्री गुरु अमरदास जी ने भी कर्मकांड प्रधान कर्मों का खंडन किया है। श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं :

-करम कांड बहु करहि अचार ॥

**रीसर्च स्कालर, गुरु नानक सिक्ख स्ट्डीज विभाग, पंजाब यूनीवर्सिटी, चंडीगढ़। फोन: +९१९८७६६-९५५०६*

बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥ *(पन्ना १६२)*
-अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ *(पन्ना ४९१)*
-इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ *(पन्ना १२८५)*

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी के अनेक संदर्भों में अध्यात्म-कर्म करने पर बल दिया है, जैसे कामदिक वासनाओं को मारना, परमात्मा और गुरु-शबद में दृढ़ विश्वास रखना सतसंगति करना, परमात्मा के हुक्म एवं रजा को मानना, जाति भेदभाव से ऊंचे उठ कर सभी के साथ समभाव से व्यवहार करना आदि।

श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि किसी भी व्यक्ति को जाति का अभिमान नहीं करना चाहिए। जातिगत अभिमान से अनेक विकारों की उत्पति होती है। पांच तत्वों-- आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी से सृष्टि के समस्त प्राणियों की रचना हुई है। कौन कह सकता है कि अमुक बड़ा है, अमुक छोटा?

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥१॥ रहाउ ॥
चारे वरन आखै सभु कोई ॥
ब्रहमु बिंद ते सभ ओपति होई ॥२॥
माटी एक सगल संसारा ॥
बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥३॥
पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥
घटि वधि को करै बीचारा ॥४॥
कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥५॥
(पन्ना ११२७)

परमात्मा के द्वार पर जातिगत भेदभाव का कोई अर्थ नहीं बैठता। वहां तो कर्मों के अनुसार निर्णय होता है। भक्ति में अनुरक्त व्यक्ति ही उत्तम हैं और उनकी जात-पात शबद की आराधना पर अवलंबित है:

भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥
बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥ *(पन्ना ४२६)*

मुगल शासन काल में भारतीय स्त्रियों पर अत्याचार चरम सीमा पर पहुंच चुका था। इसके बारे में प्रिं. तेजा सिंघ अपनी पुस्तक "एमेज़ इन सिक्खिज्म" पृष्ठ १२-१३ पर लिखते हैं कि "यह परम शोचनीय बात थी कि स्त्रियों का सम्मान उनके परिवार में ही समाप्त हो गया। अमरत्व की साधना के सारे अधिकारों से वे वंचित कर दी गई थीं। वे आध्यात्मिक उत्तरदायित्व से विहीन थीं। गृह परिचर्या ही काम था और उसी में उन्हें संतोष करना पड़ता था।"

उस समय में समाज में स्त्री से संबंधित कई कलुषित परंपराएं स्थापित हो चुकी थीं, जिनके फलस्वरूप समाज में अनेक प्रकार के जघन्य और हेय कृत्य किए जाते थे। श्री गुरु अमरदास जी ने स्त्रियों के लिए पुरुष समाज द्वारा प्रचलित की गई कठोर एवं अमानवीय प्रथाओं का विरोध किया और अपने अनुयायियों को ऐसी प्रथाओं विशेषत: सती-प्रथा को त्यागने के लिए आदेश दिया। इस प्रकार की जन-चेतना सजग करने के पश्चात् ही अकबर को वैधानिक ढंग से सती-प्रथा को रोकने के लिए आदेश जारी करना पड़ा था। गुरु जी ने वास्तविक 'सती स्त्री' का स्वरूप चित्रित करते हुए चिता पर जलने की अपेक्षा परमात्मा को पाने की विरह की चोट से मरने का संदेश दिया और शील तथा संतोष की पालना द्वारा पति (परमात्मा) को स्मरण करने के लिए भी प्रेरित किया :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥
(पन्ना ७८७)

गुरु जी ने कन्या-हनन की प्रथा को भी बहुत निकृष्ट घोषित करते हुए ऐसे व्यक्ति से संपर्क अथवा उसके दान, धन आदि को घृणित बताया है :

ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥
फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥
(पन्ना १४१३)

स्त्रियों के लिए पर्दा-प्रथा भी गुरु साहिब को मान्य नहीं थी। पर्दे के साथ स्त्रियों का उनके दरबार में दर्शनार्थ प्रवेश करना निषिद्ध था।

लंगर की व्यवस्था का आरंभ श्री गुरु नानक देव जी ने ही कर दिया था। इस परंपरा को श्री गुरु अंगद देव जी के समय और अधिक दृढ़ किया गया। श्री गुरु अमरदास जी ने इस मर्यादा को अधिक स्थायी बनाने के लिए 'पहले पंगत पाछै संगत' की घोषणा की। गुरु जी के दर्शन के लिए जो भी जिज्ञासु आता, उसके लिए पहले पंगत में बैठकर लंगर (भोजन) छकना अनिवार्य बन गया। गुरु जी ने पंगत की मर्यादा पर इसलिए अधिक बल दिया क्योंकि जाति भेदभाव और ऊंच-नीच की भावना को समाप्त करने के लिए यही अपेक्षाकृत उचित साधन था।

इसी प्रकार श्री गुरु अमरदास जी दिनों और वारों में शुभ-अशुभ के विचार को व्यर्थ और मूर्खता की बातें मानते हैं। प्रकृति द्वारा निश्चित किए क्रम अनुसार दिन-रात आते हैं। यदि अपने मूल रूप में कोई दिन अच्छा-बुरा नहीं हो सकता, तो फिर कोई तिथि अथवा वार शुभ या अशुभ कैसे हो सकते हैं :

थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ (पन्ना ८४३)

श्री गुरु अमरदास जी पति और पत्नी के रिश्ते को शारीरिक रिश्ते से भी आगे आत्मा का रिश्ता मानते हैं और उन्हें एक ज्योति कहते हैं। धुर आत्मा में बसी प्रीति न रूप के खत्म होने से टूटती है, न मन के चढ़ जाने से। आपने दांपत्य जीवन का आदर्श ऐसे बताया है :

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ७८८)

अगर आज भी पति-पत्नी अपने रिश्ते को इस तरह मानें तो जो हमारे समकालीन समाज में तलाक की समस्या हमारे लिए बड़ी चुनौती है, वह स्वत: ख़त्म हो जाएगी।

मानवता के दुख को समझने वाले श्री गुरु अमरदास जी उस समय के समाज में प्रचलित कई रीति-रिवाज़ों को समाज की कुछ निर्बल श्रेणियों के साथ अन्याय मानकर उनके विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ उठाते हैं। श्री गुरु अमरदास जी का व्यक्तित्व श्रेष्ठ और अद्वितीय था, इसलिए भट्ट भल जी का निम्नांकित कथन अक्षरश: सत्य है :

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु अमरदास जी

*-बीबी प्रीतइंद्र कौर**

सिक्ख धर्म में तीसरे गुरु-स्थान पर सुशोभित श्री गुरु अमरदास जी मध्य काल के महान धर्म-साधक, संत, भक्त एवं समाज-सुधारक थे। आप जी उच्च कोटि के बाणीकार, मानवता के रक्षक, धर्म प्रचारक, सुयोग्य संस्थापक और अपूर्व सुधारवादी थे। जन-कल्याण की सेवा-भावना आपके रोम-रोम में निहित थी। बेसहारों के सहारे, अनाथों के नाथ, असहायों के सहायक आदि अनगिनत श्रद्धायुक्त विशेषणों से आपको विभूषित किया जाता है।

सेवा एवं श्रद्धा के पुंज श्री गुरु अमरदास जी का जन्म रेलवे स्टेशन छेहरटा, ज़िला श्री अमृतसर से पांच किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम की ओर बसे बासरके गांव में ८ ज्येष्ठ, संवत् १५३६ तद्नुसार ५ मई, १४७९ ई को श्री तेजभान जी और माता सुलक्खणी (लखमी) जी के घर हुआ। श्री तेजभान जी भक्ति-भाव वाले बड़े शालीन एवं कर्मठ व्यक्ति थे। उनके चार सुपुत्रों में से श्री गुरु अमरदास जी सबसे बड़े थे। व्यापार और खेती दोनों गुरु जी के परंपरागत व्यवसाय थे और भक्ति-भावना एवं कर्मनिष्ठा आपको बपौती के रूप में प्राप्त हुई थी।

आपका जीवन आध्यात्मिक जिज्ञासु का जीवन था। गुरु जी के आरंभिक जीवन का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आपकी अभिरुचि बाल्य-काल से ही धार्मिक कार्यों में थी। अपने जीवन-काल में आपने अनेक तीर्थ-यात्राएं की परंतु मन की भटकना खत्म न हुई। एक दिन प्रातः आपके भाई की पुत्र-वधू बीबी अमरो जी द्वारा गाए गए निम्नांकित अमृत बाणी वाले शबद का मधुर स्वर आपको कर्णगोचर हुआ :

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥ (पन्ना ९९०)

इस बाणी के भावों से प्रभावित होकर, गुरु-मिलन की तड़प बीबी अमरो जी द्वारा खडूर साहिब में श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करवाने के बाद शांत हुई। ६२ वर्ष की वृद्धायु में आपने गुरु-चरणों की शीतलता प्राप्त की। गुरु जी के तुल्य श्रद्धालु सेवक शायद ही जगत में कोई अन्य हुआ हो। वृद्धायु में प्रतिदिन गुरु जी के स्नान के लिए ब्यास दरिया से जल लाना, लंगर के बर्तन साफ करना, पंखा झलना इत्यादि आपके जीवन के आदर्श सेवा-कार्य थे।

श्री गुरु अमरदास जी सेवा की प्रतिमूर्ति थे। अद्वितीय सेवा-भाव, विनम्रता, दृढ़ता, कर्त्तव्यपालन आदि गुणों से ओतप्रोत होने के फलस्वरूप ही श्री गुरु अंगद देव जी ने आप जी को गुरगद्दी प्रदान की। आप जी महान समाज-सुधारक थे। आपकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। आप जी ने जो उपदेश दिए पहले उनके अनुरूप अपने जीवन को ढाला। आपने सांसारिक प्राणियों को धर्म-मार्ग पर लाने के लिए संगत एवं पंगत की प्रथा का

**रिसर्च स्कालर, सिंघानिया यूनीवर्सिटी, पचेरी बारी, ज़िला झुनझुनू (राजस्थान), फोन: +९१९४६३३-२८८००*

प्रारंभ किया।

श्री गुरु अमरदास जी सुयोग्य प्रबंधक थे, कुशल आयोजक, संस्थापक एवं धर्म-प्रचारक थे। आपने गुरगद्दी पर सुशोभित होने के बाद सिक्ख जिज्ञासुओं को संगठित करने हेतु एवं गुरमति के प्रचार हेतु २२ मंजियों (प्रचार-केंद्र) की स्थापना की। इन २२ मंजियों का कार्य-भार चलाने के लिए आपने विश्वस्त प्रचारकों को नियुक्त किया और इन्हीं २२ मंजियों के माध्यम से सिक्ख धर्म की आध्यात्मिक विचारधारा का प्रचार एवं प्रसार किया। आपने विश्व मानवता केंद्र स्थापित करने की ओर ध्यान दिया। आपने श्री गुरु रामदास जी को एक नगर स्थापित करने का आदेश दिया और वहां सरोवर खुदवाने की भी प्रेरणा दी। इस नगर को पहले चक्क गुरु तथा बाद में रामदासपुर कहा जाने लगा और कालांतर में इसी नगर को श्री अमृतसर के नाम से ख्याति प्राप्त हुई। शनैः-शनैः श्री अमृतसर मानवता का आध्यात्मिक केंद्र बन गया।

श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब में एक बाउली का निर्माण करवाया। एक ओर लोक-कल्याण की भावना से युक्त कार्य करना वे अपना धर्म समझते थे और दूसरी तरफ समाज के लोक-विश्वासों पर आधारित उनकी धार्मिक मान्यताओं में सुधार करके समाज और धर्म को सही रूप में एक दूसरे के अविरुद्ध करना ही उनके लिए एक कर्त्तव्य था। इस प्रकार उन्होंने धर्म को संकीर्णता के परिपेक्ष से निकालकर सर्वथा लोक-हित एवं आध्यात्मिक उन्नति की भाव-भूमि पर स्थापित किया। 'पहले पंगत पाछै संगत' के सिद्धांत का निर्माण करके उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि गुरु जी के दर्शन का अधिकारी वही व्यक्ति हो सकता है जो समाज के भेदभाव से परे हो। समाज के किसी भी वर्ग का व्यक्ति हो प्रत्येक को गुरु-दर्शन से पूर्व पंगत में बैठकर लंगर छकना आवश्यक था। यहां तक कि एक बार सम्राट अकबर भी गुरु जी से मिलने आया तो उसने पहले पंगत में बैठकर लंगर छक कर फिर श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन किए। गुरु जी के द्वारा चलाई गई लंगर-प्रथा जात-पात के खिलाफ जोरदार आवाज़ थी। गुरु जी के काल में भारतीय समाज अनेक अंधविश्वासों एवं सामाजिक बुराइयों से ग्रस्त था। नारी की दुर्दशा को देखकर गुरु जी ने समाज में नारी को उचित स्थान दिलाने के अनेक प्रयत्न किए। स्त्रियों में उन दिनों पर्दा-प्रथा का रिवाज़ था। गुरु जी ने इसे त्यागकर धार्मिक दरबारों में आने की प्रेरणा दी तथा इसका विरोध किया। पति की मृत्यु होने पर स्त्री द्वारा उसकी चिता पर आत्म-दाह करना अर्थात् सती हो जाना एक आम बात थी। सती होने में धार्मिक अंधविश्वास और सामाजिक ज़बरदस्ती की भावना अधिक थी। गुरु जी ने इस अमानवीय कृत्य को बंद करने के लिए अपनी बाणी में फरमान किया और अपने शिष्यों को इस प्रकार की सामाजिक बुराइयों को दूर करने को कहा। श्री गुरु अमरदास जी का पावन फरमान है :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवन साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥

(पन्ना ७८७)

इसी प्रकार कन्या हनन प्रथा को भी निष्कृष्ट घोषित किया और ऐसे व्यक्ति को घृणित कहा जो कन्या हनन करते हैं :

(शेष पृष्ठ १७ पर)

सेवा के पुंज श्री गुरु अमरदास जी

*-स. गुरदीप सिंघ**

आधुनिक काल में हर कोई सेवा के महत्त्व पर ज़ोर दे रहा है। दूसरों को सुख पहुंचाने हेतु किए जाने वाले कार्य को ही सेवा कहते हैं। श्री गुरु अमरदास जी का श्री गुरु अंगद देव जी के प्रति विश्वास एवं प्यार उनके अंग-अंग में समाया हुआ था। वे हर समय सेवा में मग्न रहते थे। उन्होंने अपने हृदय में यह शिक्षा अच्छी प्रकार दृढ़ कर ली थी कि सिक्ख तभी गुरु के दर की स्वीकृति प्राप्त कर सकता है जब वह अपना तन, मन, धन गुरु को अर्पित करके निष्काम सेवा में मग्न रहे।

एक दिन प्रभात के समय श्री गुरु अमरदास जी को साथ वाले घर से मधुर आवाज़ सुनाई दी :

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥
चित चेतसि की नही बावरिआ ॥
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ *(पन्ना ९९०)*

यह शबद श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो जी पढ़ रही थीं जो श्री गुरु अमरदास जी के छोटे भाई की पुत्र-वधू थी। इस बाणी का श्री गुरु अमरदास जी पर बहुत प्रभाव पड़ा। दिल में यह उमंग उठी कि जिस पुरुष की बाणी इतनी मीठी है उनके दर्शन अवश्य करने चाहिए। साथ ही साथ यह भी आशा जागी कि शायद उनके दर से ही मन को शांति मिल सके। दिन चढ़ने पर आपने बीबी अमरो जी से पूछा कि "जिस बाणी का वह पाठ कर रही थी वह किनकी बाणी है और वे कहां मिल सकते हैं?" बीबी अमरो जी ने उन्हें बताया कि "यह बाणी श्री गुरु नानक देव जी की है जिनकी गद्दी पर इस समय मेरे पिता-गुरु जी खडूर साहिब में विराजमान हैं।" यह सुनकर श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने और उनको 'गुरु' बना लेने का फैसला कर लिया तथा खडूर साहिब के लिए रवाना हो गए। खडूर साहिब पहुंचकर श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी की हजूरी में गए। उनके चरणों में नत्मस्तक हो गए। दर्शन-दीदार करके मन को शांति मिली। श्री गुरु अमरदास जी वहां उनके चरणों में ही बैठ गए। श्री गुरु अंगद देव जी ने उनको उठाया और अपने पास बैठने को कहा। श्री गुरु अमरदास जी ने कहा-- "निथावें को थांव दो और निगुरे के गुरु बन जाओ।" तब श्री गुरु अंगद देव जी ने कहा-- "गुरु नानक पातशाह की सिक्खी संगत की सेवा से मिलती है। सेवा करो! जिसने भी कुछ पाया है, वह सेवा करके ही पाया है।" श्री गुरु अमरदास जी उसी समय सेवा में जुट गए। जितनी श्रद्धा, प्यार, सत्कार से श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की सेवा की थी उतने ही प्यार-सत्कार और श्रद्धा-भाव से श्री गुरु अमरदास जी सेवा करते रहे। संगत को पंखा झुलाना, गुरु जी के स्नान के लिए पानी लाना, लंगर के लिए

*३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०

लकड़ी लाना, संगत के जूठे बर्तन साफ करने, पूरी तनदेही से सेवा में लिप्त रहे।

एक दिन सर्दी पूरे यौवन पर थी। बरसात हो रही थी। कड़ाके की ठंड, बिजली की चमक, बादलों की गड़गड़ाहट। श्री गुरु अमरदास जी नित्य की भांति पानी की गागर भरकर सिर पर उठाए चले आ रहे थे। खडूर साहिब पहुंचे तो अंधेरा होने के कारण ठोकर खाकर एक जुलाहे की खड्डी में गिर गए परंतु आपने गागर को सिर पर से न गिरने दिया। खटाक की आवाज़ सुनकर जुलाही ने अंदर से ही गुस्से में आकर कहा, "अमरू निथांवां होणा ए, जिस नूं ना दिन विच चैन ए ते ना ही रात नूं! रोटी दे बदले कुड़मां दे दरवाजे 'ते रुल रिहा ए।" यह आवाज़ सुनकर श्री गुरु अमरदास जी के मुख से वचन निकले-- ओ झल्लीए! अमरू निथांवां किस तरां होइआ? मेरे सिर 'ते मेरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी दा हत्थ ए। गुरु वाले कदी निथांवें नहीं हुंदे।" कहते हैं कि जुलाही उसी समय झल्ली (बावरी) हो गई। दिन के समय श्री गुरु अंगद देव जी के चरणों में हाज़िर होकर संगत द्वारा सारी बात बताई गई तो गुरु जी ने संगत को संबोधित करके कहा कि "ये तो निथांवों के थांव, निमाणों के माण, निओटिओं की ओट और निआसरों के आसरा हैं।"

जल भरिओ सतिगुरु के दुआरे।
तब इह पाइओ महल अपारे। (वार ४१:२१)

जब श्री गुरु अमरदास जी पहली बार श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने गए थे तब उनकी आयु काफी हो चुकी थी। प्राय: देखा जाता है कि मुर्शद आयु में और अजमत में हमेशा बड़ा होता है पर सिक्ख मत में यह परंपरा नया रूप धारण कर चुकी थी। सिक्ख मत में गद्दी का रहस्य यह है कि यहां अजमत की महिमा देखी जाती है, आयु की गिनती नहीं की जाती। श्री गुरु अमरदास जी जब श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में आए तो श्री गुरु अंगद देव जी की आयु ४७ वर्ष और श्री गुरु अमरदास जी की ६२ वर्ष थी।

सेवा की भावना श्री गुरु अमरदास जी के पहले जीवन में भी थी। श्री गुरु अंगद देव जी की संगत में आने से यह पूरी तरह से प्रफुल्लित हुई। आपने जिस प्रकार प्रेम-भाव से, पूरी निष्ठा के साथ तन, मन, धन से सेवा की वह सिक्खों के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा-स्रोत बन गई। आपकी सेवा में सदा अडिगता बनी रही जो समय के साथ-साथ बढ़ती गई। सेवा करते हुए आप आनंद की ऐसी अवस्था तक पहुंच गए, जहां पर किसी प्रकार की कोई थकान या उकताहट नहीं बल्कि नया उत्साह और ताज़गी थी। इससे सेवा-शक्ति में वृद्धि होती है। यह आयु के साथ बूढ़ा नहीं होने देती। सेवा ही भक्ति का दरवाज़ा खोलती है और पूर्णता की तरफ ले जाती है।

सेवा में त्याग है, अपने आप का त्याग। यह एक कुर्बानी है। गुरु साहिबान के पद-चिन्हों पर ही सिक्ख चलते रहे। भाई मानक चंद की कुर्बानी भरी सेवा इसका उदाहरण है। यह जानते हुए कि बाउली का कड़ तोड़ने वाला व्यक्ति बीच में ही डूब जाएगा, भाई मानक चंद ने खुशी से यह कठिन सेवा निभाई।

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अमरदास जी के १७ रागों में ८९१ शबद हैं। श्री गुरु अमरदास जी ने जीवन-मनोरथ, प्रभु-प्राप्ति के साधन, अकाल पुरख पर दृढ़ विश्वास, माया के प्रभाव, नाम-सिमरन, मनमुख, गुरमुख, प्रभु की सिफत-सलाह, काम-क्रोध, लोभ-मोह, अहंकार के बारे

में बाणी उच्चारण की है। श्री गुरु अमरदास जी के वचनों के अनुसार गुरु की सीख को मानने वाला मनुष्य गुरु के दर पर प्रवान होता है। गुरु की सेवा से ही सब कुछ प्राप्त होता है। सेवा करते समय अहंकार को मन से निकाल देना चाहिए। जात-पात का सिक्ख धर्म में कोई स्थान नहीं है। सिक्ख महिला का घूंघट निकालकर संगत में आना मनमति है। गुरु जी के उपदेशों के अनुसार चलने से ही मनुष्य को खुशी और आनंद की अवस्था प्राप्त होती है। इससे जीवन उच्च हो जाता है।

गुरु पातशाह की महिमा अकथ्य है। भट्ट भल जी कहते हैं कि बादलों से निकलती हुई बूंदों, धरती की सारी वनस्पति, बसंत के फूलों, सूर्य और चंद्रमा की किरणों, समुद्र के उदर को, गंगा की लहरों को तो गिना जा सकता है, इनका शायद कोई अंत पा सके मगर श्री गुरु अमरदास जी के गुणों का वर्णन करना असंभव है। इसलिए यही कहना उचित होगा कि श्री गुरु अमरदास जी की तुलना किसी से नहीं की जा सकती :

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जुो गावै ॥
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु अमरदास जी

(पृष्ठ १४ का शेष)

ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु
फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥
(पन्ना ७८७)

श्री गुरु अमरदास जी उच्च कोटि के बाणीकार थे। सत्य के मार्ग पर चलना, परमात्मा के प्रति निष्ठा रखना, व्यक्ति और समाज के प्रति कार्यान्वित रहना उनके व्यक्तित्व का अंग था, जिसका संकेत हमें उनके द्वारा उच्चरित बाणी में भी मिलता है। अपनी बाणी में नित्तनेम से लेकर मानव जीवन के जन्म-मृत्यु, हर्ष-शोक, उत्थान-पतन, सुख-दुख, वैराग्य-मोह आदि के परिष्कार हेतु उपदेशात्मक शबद कहे हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अमरदास जी के ८९१ शबद १७ रागों में शामिल हैं।

अंततः हम यह कह सकते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी अनुभवी, साधक, अत्यंत दयावान, दीन-दुखियों की सहायता करने वाले, गुरु-भक्ति एवं गुरु-सेवा में तत्पर, समाज के प्रति भ्रातृ-भाव धारण करने वाले, दूरदर्शी, मानव-प्रेमी, उदार दृष्टिकोण वाले, समाज में पनपे अंधविश्वासों का निराकरण करने वाले, समाज-कल्याण को अपना धर्म मानने वाले, सुयोग्य प्रबंधक, कुशल उपदेशक, निष्काम साधक एवं महान समाज-सुधारक थे। उनका व्यक्तित्व महान तेजस्वी का व्यक्तित्व था। वस्तुतः उनका व्यक्तित्व श्रेष्ठ और अद्वितीय था। भट्ट भल जी का निम्नांकित कथन गुरु जी की उपमा में प्रासंगिक है :

भले अमरदास गुण तेरे
तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ (पन्ना १३९६)

श्री मुकतसर साहिब के शहीद : ४० मुकते

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

शहीद और शहादत अरबी भाषा के शब्द हैं। शहादत का शाब्दिक अर्थ है : गवाही देना। गवाही देने वाले को 'शहीद' कहा जाता है। मौखिक या लिखित गवाही देने वाले को शहीद नहीं कहा जा सकता। ऐसी हज़ारों गवाहियां अदालतों में रोज़ाना दी व दिलवाई जाती हैं। अन्य स्थानों पर भी। असली शहीद वही होता है, जो अन्याय, अत्याचार, ज़ब्र, धक्केशाही, अधर्म के खिलाफ अपनी आत्मा की आवाज़ बुलंद करते हुए और जूझते हुए अपनी जान की कुर्बानी द्वारा गवाही देता है। वास्तव में कोई शूरवीर, बहादुर, निडर व्यक्ति ही शहादत यानि कुर्बानी दे सकता है। भक्त कबीर जी के कथनानुसार :

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

जब श्री अनंदपुर साहिब में सिंघों के इर्द-गिर्द दुश्मनों की सेनाओं की कई महीनों तक घेराबंदी बनी रही, तब किले के भीतर खाने-पीने वाली वस्तुएं खत्म हो गईं। भूखे पेट युद्ध जारी रखना कुछ सिंघों को मुश्किल लगने लगा। तब वे समझ न सके कि वाहिगुरु उनके धैर्य की परीक्षा ले रहा है। घेराबंदी के दौरान एक दिन वे सिंघ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास आए और निवेदन किया कि हमें आज्ञा दी जाए। हम अपने घरों को लौट जाना चाहते हैं। गुरु जी ने कहा कि अगर आप ऐसी स्थिति में जाना चाहते हो तो मुझे लिखकर दो कि आज से न आप हमारे गुरु हैं और न हम आपके सिक्ख। ये चालीस सिंघ गुरु जी को बेदावा लिखकर देने के उपरांत रात्रि के अंधेरे में श्री अनंदपुर साहिब के किले को छोड़ अपने घरों को चल दिए। 'महान कोश' के अनुसार ये चालीस सिंघ थे-- भाई महा सिंघ, भाई खुशाल सिंघ, भाई निहाल सिंघ, भाई सरजा सिंघ, भाई गुलाब सिंघ, भाई निधान सिंघ, भाई साधू सिंघ, भाई गंगा सिंघ, भाई बूड़ सिंघ, भाई सुहेल सिंघ, भाई गंडा सिंघ, भाई भाग सिंघ, भाई सुलतान सिंघ, भाई घरबाटा सिंघ, भाई भोला सिंघ, भाई सोभा सिंघ, भाई चंबा सिंघ, भाई भंगा सिंघ, भाई संत सिंघ, भाई जादो सिंघ, भाई समीर सिंघ, भाई हरसा सिंघ, भाई जोगा सिंघ, भाई मज्जा सिंघ, भाई हरी सिंघ, भाई जंग सिंघ, भाई मान सिंघ, भाई करन सिंघ, भाई दयाल सिंघ, भाई मैया सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई दरबारा सिंघ, भाई राइ सिंघ, भाई काल्हा सिंघ, भाई दिलबाग सिंघ, भाई लछमण सिंघ, भाई कीरत सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई क्रिपाल सिंघ, भाई धंना सिंघ।

जब ये सिंघ अपने गांव पहुंचे, तब वहां यह ख़बर फैलते देर न लगी कि ये सिंघ गुरु जी को बेदावा लिखकर दे आए हैं। हर किसी ने इनके इस कार्य की निंदा की। स्त्रियों ने इन्हें ताना देते हुए कहा, "चूड़ियां पहन लो! बच्चों को संभालो! तुम लोग स्त्रियों वाले काम करो और हम जाएंगी गुरु महाराज के साथ

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : +९१९८७२२-५४९९०*

मैदान-ए-जंग में।"

माता भाग कौर जी (माई भागो जी) ने इन्हें बड़ी सूझ-बूझ से प्रेरित किया और पुन: मैदान-ए-जंग में गुरु जी का साथ देने के लिए उत्साहित किया। गुरु जी को छोड़कर आने वाले सिंघों की सोई आत्मा और गैरत जाग उठी। वे घोर आत्मग्लानि तथा पश्चाताप करते हुए जज़्बा व जोश लेकर पुन: युद्ध में शामिल होने के लिए माता भाग कौर जी के नेतृत्व में शहादत की एक नई मिसाल कायम करने हेतु चल पड़े।

गुरु जी चमकौर साहिब के युद्ध के बाद माछीवाड़ा के जंगल में पहुंचे थे। अब तक गुरु जी के चार साहिबज़ादे तथा माता गुजरी जी शहीद हो चुके थे। वहां से गुरु जी जट्टपुरा होते हुए दीना नामक स्थान पर पहुंच गए। मुगल सेना आपका पीछा कर रही थी। मुगल सरकार को पता था कि गुरु जी जहां-जहां भी जाएंगे लोगों में नया जोश, नया उत्साह भरता जाएगा। मुगल फौज क्रियाशील थी कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को घेर लिया जाए अन्यथा सिक्खों की ताकत बहुत बढ़ जाएगी।

गुरु जी खिदराणा की ढाब, जिसे अब श्री मुकतसर साहिब कहा जाता है, पर पहुंचे। माझा क्षेत्र से भी सिंघों का एक जत्था (दल) जो गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब में बेदावा लिखकर दे आया था माता भाग कौर जी सहित वहां पर पहुंच गया। ढाब के निकट ही उस जत्थे ने पड़ाव डाला। शाही फौज भी पीछा करती हुई पहुंच गई। शाही फौज ने आक्रमण कर दिया। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ। उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कुछ दूरी पर रेत के एक ऊंचे टीले पर खड़े होकर यह सारा दृश्य देख रहे थे और अपनी कमान से तीरों की वर्षा कर रहे थे। इस मौके पर सिंघों ने ऐसी शूरवीरता दिखाई और तेग चलाई कि शाही सेना के हौसले पस्त हो गए। उसे काफी जानी नुकसान झेलकर भागना पड़ा। शाही फौज को एक और विपदा आन पड़ी कि उसे पीने हेतु पानी तक न मिला। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन-काल में जितने भी युद्ध लड़े, उनमें से श्री मुकतसर साहिब का युद्ध अंतिम युद्ध था। यह युद्ध १७०५ ई में लड़ा गया। यहां पर मुगल सेना को बहुत बड़ी पराजय झेलनी पड़ी।

जब युद्ध खत्म हुआ तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जंगे-मैदान में शहीद और घायल हुए सिंघों के पास आए। उन्होंने जब नज़दीक आकर देखा तो पाया कि ये तो वही सिंघ हैं, जो उन्हें श्री अनंदपुर साहिब में बेदावा लिखकर दे आए थे। मैदान-ए-जंग में शहीद हुए अपने सिंघों को गुरु जी ने देखकर प्रत्येक का शीश बारी-बारी अपनी गोद में लेकर प्यार किया; अपना स्नेह न्योछावर किया। किसी को 'पांच हज़ारी' तो किसी को 'दस हज़ारी' कहकर निवाज़ा। उन्होंने जब एक सिंघ का शीश ऊपर उठाया, तब देखा कि वह अभी सिसक रहा है। गुरु जी ने उसके मुख पर बहते लहू को पोंछकर गौर से देखा तो पहचान लिया कि यह भाई महां सिंघ है। तुरंत उसके मुंह में पानी डाला। भाई महां सिंघ की आंखें अधखुली थीं। स्वयं को अपने रहबर, अपने गुरु की गोद में पाकर उसका रोम-रोम तृप्त हो गया। वह धन्य हो उठा। गुरु जी ने प्यार से पूछा "सिंघा, तुम्हारी कोई इच्छा है, तो बताओ!"

भाई महां सिंघ का उत्तर था, "आपके दर्शन की इच्छा थी, वह पूरी हो गई। अब कृपा करो और वह बेदावा फाड़ दो। अपने चरणों के साथ जोड़ो। टूटी गांठ दो।"

गुरु जी ने एक क्षण की देरी न की तथा कागज़ का वह टुकड़ा जेब में से निकालकर भाई महां सिंघ के सामने फाड़ दिया। टूटी हुई प्रीति गांठ दी। इसके तुरंत बाद भाई महां सिंघ प्राण त्यागकर शहादत का जाम पी गए।

इस तरह श्री मुकतसर साहिब के युद्ध में शहादतें देकर श्री अनंदपुर साहिब में बेदावा देने वाले सिंघ अमर हो गए। गुरु जी द्वारा उनका लिखा बेदावा फाड़ने पर तथा आशीर्वाद देने पर वे सिंघ मुक्त हो गए। तब से 'खिदराणे की ढाब' का नाम 'श्री मुकतसर साहिब' प्रचलित हो गया। माता भाग कौर जी भी इस युद्ध में दुश्मनों का मुकाबला करती हुई गंभीर रूप से घायल हो गई थीं।

इन चालीस मुकतों की याद में प्रत्येक वर्ष श्री मुकतसर साहिब में जोड़-मेला आयोजित होता है। इसमें शामिल होने के लिए देश-विदेशों से सिक्ख संगत इकट्ठा होती है। इन महान् चालीस सिंघों को कोटि-कोटि प्रणाम! गुरु जी महान हैं, जो भूल करने वालों को क्षमा कर देते हैं। भूल को सुधारने पर जीवन सुधर जाता है; जन्म सफल हो जाता है। ❁

कविता

गुरु ग्रंथ जी की बाणी को हृदय में बसाएं

*-स. निरवैर सिंघ अरशी**

गुरु ग्रंथ साहिब जी को, श्रद्धा से सर निवाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
कोई शत्रु न बेगाना, सब में प्रभु का नूर।
दिव्य-दृष्टि से जो देखें, वो है ज़ाहिर-जुहूर।
भाई घनईया जी जैसी, सोच हम बनाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
हिंदू या सिक्ख, मुस्लिम, सब उसी के सजाए।
माटी तो एक, बरतन भांति-भांति के बनाए।
आओ भ्रम का चश्मा, आंखों से हम हटाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
न कोई ऊंचा-नीचा, न कोई आम-खास।
बाणी तो बांटती है, सर्वत: को मिठास।
आओ दिलों से घृणा और द्वैत को मिटाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
मंज़िल नई दिखाए, जपु जी की अमर बाणी।
सुख-शांति से निवाज़े, सुखमनी सुख की खाणी।
लट-लट ज्ञान-दीपक, चहुं ओर हम जलाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
देखो कि कितना ऊंचा, सर्वोत्तम ज्ञान है।
महाराजाओं की जननी, औरत महान है।
अब नारी नहीं बेचारी, बराबर इसे बैठाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
बंदगी में ज़िंदगी है, सेवा से मिलता मेवा।
गुरु ग्रंथ जी का पुजारी, माने न देवी-देवा।
परचम अकाल का ही, कुल विश्व में झुलाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
न बुरा किसी का सोचें, सबसे करें भलाई।
सच की डगर न छोड़ें, यही तो है दानाई।
झूठे रसों-कसों से, हर्गिज़ न प्यार पाएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।
'अरशी' अनमोल अवसर, न आए दिन मिलेंगे।
इस वादिए-चमन में, न सदैव गुल खिलेंगे।
सो नाम वाहिगुरु का, हम दम-ब-दम ध्याएं।
गुरु ग्रंथ जी की बाणी को, हृदय में बसाएं।

**बिल्डिंग यूको बैंक, नई आबादी, श्री अनंदपुर साहिब-१४०११८, फोन: +९१९८८८६-३६४१३*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की धार्मिक दृष्टि

*-डॉ. जसबीर सिंघ साबर**

सिक्ख धर्म में सिक्ख गुरु साहिबान के अतिरिक्त बहुत सारे ऐसे नायक हुए हैं, जिन्होंने न केवल अपने धर्म को ही प्रफुल्लित करने हेतु अपना जीवन समर्पित किया बल्कि जनमानस के कल्याण हेतु तत्कालीन हाकिमों के ज़ब्र-जुल्म के विरुद्ध धर्म-युद्ध करते हुए सामान्य आदमी को *"जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥"* की भावना के अनुसार सिर ऊंचा कर स्वाभिमान के साथ जीवन व्यतीत करने का व्यवहारिक मार्ग दर्शन भी किया। लछमण देव से माधोदास बैरागी और खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त कर माधोदास से बने बाबा बंदा सिंघ बहादुर ऐसे परोपकारी नायकों में से एक थे।

निःसंदेह बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शख़्सियत बहुपक्षीय है और इतिहासकारों ने उनके अनेकों पक्षों को कलमबंद भी किया है, परंतु मुख्य इतिहासकार (फारसी स्रोत) बहुसंख्या में इस्लामिक धारा के साथ जुड़े होने के कारण बाबा जी के जीवन निर्माण को सही प्रसंग में प्रस्तुत करने से असमर्थ ही रहे लगते हैं। ऐसे लगता है कि इस प्रकार के इतिहासकार की तरह तथ्यमूलक घटनाएं प्रस्तुत करने की जगह इस्लाम का पक्ष ले रहें हों। यही कारण है कि उनकी लिखित के अनुसार तो बाबा बंदा सिंघ बहादुर इस्लाम के विरुद्ध और खूंखार वृत्ति वाले निर्दयी पुरुष थे। जब हम बाबा बंदा सिंघ बहादुर की नांदेड़ से सरहिंद फ़तहि करने तक की समूची गतिविधियों का ईमानदारी के साथ निष्पक्ष दृष्टि से मूल्यांकन करते हैं तो इस्लामिक रंगत वाले इतिहासकारों का मत तथ्यमूलक न होकर उनकी इस्लामिक रंगत वाली सोच के कारण सच की परख-कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

बाबा जी के पूर्ण जीवन-निर्माण को प्रस्तुत करने की इस लघु निबंध में गुज़ाइश नहीं है, इसलिए उनके अनेक बहुमूल्य पक्षों में से उनकी धार्मिक दृष्टि वाले एक ही पक्ष को इस निबंध का केंद्र-बिंदु बनाया गया है।

सच्चाई यह है कि जब हम इस्लामिक धारा का चश्मा उतारकर तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन करते हैं तो यह तथ्य हमारे सामने उभर कर आता है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर का संघर्ष न तो मुसलमानों के और न ही इस्लाम के प्रचार-प्रसार के विरुद्ध था, उनका संघर्ष था हाकिमों के द्वारा किए जा रहे बेकसूर लोगों पर ज़ब्र-जुल्म के विरुद्ध। उन्होंने तत्कालीन हाकिम वर्ग की लोक-विरोधी मनमानी के विरुद्ध सख़्त व्यवहार अपनाया। उनका यह व्यवहार केवल मुसलमान शासकों के विरुद्ध ही नहीं था बल्कि उन्होंने ऐसी मनमानी करने वाले हिंदू और पहाड़ी हाकिमों को भी आड़े हाथों लिया। स. करम सिंघ हिसटोरीअन इस प्रसंग में ठीक ही लिखते हैं कि "बंदा (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) लोगों के साथ मिलकर ज़ालिमों के साथ लड़ने लगा था। उनका यह कार्य लोगों का ही कार्य था। यह बादशाह के

**१३, गुरु तेग बहादर नगर, डाकः खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर-१४३००१, फोनः +९१९८८८४-६०१८०*

साथ लड़ाई नहीं थी, बल्कि लोगों का ज़ालिमों का मुकाबला करने उठ खड़े होना था या राजा तथा प्रजा की लड़ाई थी।"[१]

मुख्य रूप से बाबा बंदा सिंघ बहादुर जनसाधारण के हितैषी थे जो उनकी तकलीफ़ों को बहुत ध्यान से सुनते और उनका समाधान करने के लिए कई बार तो अपने आप को खतरे में डाल लेते थे। डॉ. गंडा सिंघ का मत बिल्कुल ठीक है कि "उन्होंने उन गरीबों और बेसहारों की आशीषें प्राप्त कर लीं, जिनके दुख सदियों से किसी ने नहीं सुने थे।"[२]

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की धार्मिक दृष्टि का ज्ञान इस तथ्य से ही भली-भांति हो जाता है कि उन्होंने अपने सम्पूर्ण संघर्ष में कभी भी गैर सिक्ख लोगों के धार्मिक स्थान या धर्म-ग्रंथ का न तो अपमान किया और न ही उन पर हमला किया। इसकी ज़िंदा मिसाल है, सरहिंद में सिक्ख धर्म के कट्टर विरोधी शेख़ अहमद सरहिंदी की मज़ार तथा डेरे का ३०० वर्ष बीतने के उपरांत भी जैसे का तैसे कायम रहना। इसी तरह सरहिंद की लाल मस्जिद, मीरे मीरां के मज़ार की सलामती और वही पुराने दृश्य का नज़ारा आदि ऐसे तथ्य हैं जो मुसलमानी लिखित के विपरीत बाबा बंदा सिंघ बहादुर की समदर्शी धार्मिक दृष्टि को प्रकट करते हैं।

वास्तव में धर्म-क्षेत्र में विचरण करने वाले नानक नाम-लेवा सिक्ख को जो जन्म घुट्टी श्री गुरु नानक देव जी के संदेशों से प्राप्त हुई थी, उसके अनुसार वह किसी भी धर्म और उस धर्म के ग्रंथ का अपमान या हानि करने के बारे में सोच ही नहीं सकता। यही कारण है कि गुरबाणी में प्रत्येक धर्म वर्ग को अपनी पहचान, अपने-अपने धर्म की भावना कायम रखने की सम्पूर्ण स्वतंत्रता है। उदाहरण के रूप में गुरमति गाडी राह के बाणीकारों को किसी व्यक्ति के मुसलमान होने पर कोई परेशानी नहीं। उनका मत है कि कोई व्यक्ति सच्चा मुसलमान तब ही होता है अगर वह मोमदिल हो। बेगुनाहों को दुख-तकलीफ़ देने वाला, बेईमानी की कमाई करने वाला मुसलमान हो ही नहीं सकता :

मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ (पन्ना १०८४)

इसी तरह मुल्लां :

सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥
गुर उपदेस काल सिउ जुरै ॥ (पन्ना ११५९)

इसी तरह काजी :

सचु कमावै सोई काजी ॥ (पन्ना १०८४)

इसी तरह हाजी :

जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ (पन्ना १०८४)

गुरमति का यही दृष्टिकोण हिंदू धर्म से सम्बंधित व्यक्तियों के बारे में भी है। ये बाणीकार 'ब्राह्मण' और 'पंडित' वर्ग के विरोधी नहीं हैं, इनका विरोध उनके उस कर्मकांड, कट्टरवाद और नफ़रतवाद के साथ है जो जनसाधारण को दुखी करने वाला और उनकी खून-पसीने की कमाई को हड़पने वाला है। इसलिए गुरमति गाडी राह के अनुसार सच्चा और सही पंडित वही हो सकता है, जो सबसे पहले अपने आप को मन से ज्ञानवान बनाकर अपनी आत्मा को संसार के कण-कण में रमे हुए प्रभु-नाम के द्वारा शुद्ध कर लेता है :

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥ (पन्ना २७४)

यही रवैया ब्राह्मण वर्ग के बारे में है भावार्थ ब्राह्मण कहलाने का अधिकार केवल उस व्यक्ति को ही है जो ब्रह्म की विचार करता है :

सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥ (पन्ना ६६२)

अगर ये दोनों वर्ग इन गुणों से वंचित हैं तो इनको पंडित या ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आदेशानुसार नांदेड़ से रवाना हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आशय और उद्देश्य के विपरीत कार्य करने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। उनकी नस-नस में सिक्खी भावना समाई हुई थी, जिसके समक्ष उन्होंने ज़ब्र और जुल्म के विरुद्ध लासानी संघर्ष किया। यह बाबा बंदा सिंघ बहादुर की समदर्शी धार्मिक दृष्टि का ही करिश्मा था कि उनके पास न तो कोई युद्ध लड़ने वाली सिखलाई प्राप्त फौज थी, न ही बड़िया हथियार, न दुश्मन फौजों की तरह तोपखाना और गोली-सिक्का तथा बारूद था, फिर भी उनकी प्रत्येक जंग में विजय ने कदम चूंमे। इसका स्पष्ट कारण था, उनको प्राप्त हुआ लोक-शक्ति का अथाह प्रेम के साथ भरपूर साथ। आप जी को प्राप्त हुए इस लोक-शक्ति के साथ में अनेकों ऐसे जंगजू शूरवीर थे जो धर्म-युद्ध की भावना के अंतर्गत सिर-धड़ की बाज़ी लगाने वाले थे। यही कारण है कि उनके परंपरागत हथियारों ने दुश्मन के ऐसे दांत खट्टे किए कि वे अपने हज़ारों साथी मरवाकर मैदान-ए-जंग से हरन हो गए और 'फ़तहि' का सिहरा बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जंगजू शूरवीरों के सिर पर बंधा। यह एक अटल सच्चाई है कि लोक-शक्ति एक ऐसा 'ब्रह्म अस्त्र' होता है जो बड़ी से बड़ी हकूमत को नष्ट करने के समर्थ होता है। विशेषता यह है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर की लोक-शक्ति में प्रत्येक धर्म-वर्ग के बच्चे, नवयुवक, बुजुर्ग, स्त्रियां शामिल थे। उनके मन में धर्म-युद्ध का चाव इतना प्रचंड था कि वे घरों में पड़े हथियार उठाकर इस लोक-शक्ति में शामिल हो गए।

नि:संदेह इस लोक-शक्ति की मानसिकता, ज़ालिम हकूमत द्वारा किए गए अत्याचारों के कारण भयभीत हुई थी। ज़ालिम हकूमत ने इन गरीबों के घर उजाड़े और अपने खज़ाने भरने के लिए न केवल धन लूटा बल्कि हकूमत के नशे में गलतान इन्होंने अपनी काम-वासना की पूर्ति के लिए स्त्रियों के ज़बरन सत भी भंग किए और विरोध करने वालों को मौत के घाट उतार दिया। मलेरकोटला के शेर मुहम्मद ख़ान ने जहां वज़ीर ख़ान के दरबार में मासूम साहिबज़ादों पर जुल्म उठाने का विरोध कर सिक्खों का विश्वास प्राप्त किया, वहां उसने बतौर एक मुगल सूबेदार का अपना चरित्र दागदार भी सिद्ध किया है। शेर मुहम्मद ख़ान ने एक सिक्ख बीबी अनूप कौर को अपनी हवस का शिकार बनाने का प्रयत्न किया और जब इस सिक्ख बीबी ने इस स्थिति में अपनी जान पर खेल कर अपनी जीवन-लीला समाप्त कर ली तो इसने उस बीबी को अपनी ही हवेली में कब्र खोदकर दफन कर दिया था।

सिंघों ने इस सिक्ख बीबी की लाश को कब्र खोदकर ज़रूर बाहर निकाला और उसका सिक्ख रीति के अनुसार अंतिम संस्कार भी किया परंतु अन्य किसी कब्र को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की धार्मिक दृष्टि की परख इस बात से भी हो जाती है कि उनकी शरण में जो भी आया उन्होंने उसका नाम सिंघ रख कर उसको पूर्ण मान-सम्मान दिया। इस नीति के अंतर्गत ही सरहिंद के पड़ोसी क्षेत्र के एक हाकिम दीनदार ख़ान का नाम दीनदार सिंघ रखा गया और सरहिंद के ख़बर-नवीस मीर नसीरुद्दीन को मीर नसीर सिंघ का नाम मिल गया और ये सभी सिक्ख परिवार का हिस्सा बन गए।[३]

बाबा बंदा सिंघ बहादुर एक धैर्यवान अमृतधारी सिंघ थे, जिनके रोम-रोम में गुरु-प्रेम समाया हुआ था। नांदेड़ से आरंभ हुआ उनका गुरु-प्रेम और निश्चय निरंतर अटल तथा अडोल रहा। इसका प्रमाण है अपने राज्य की स्थापना के समय उनके द्वारा शुरू किए सिक्के और मुहरों पर श्री गुरु नानक देव जी-श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर उकेरी यादगारी लिखतें। बाबा जी का दृढ़ विश्वास था कि ये सम्पूर्ण सफलताएं और बख़्शिशें गुरु जी की अपार कृपा-दृष्टि सदका ही प्राप्त हुई हैं। जहां वे स्वयं खालसा रहित के पक्के धारणी थे वहां वे अपने साथियों को खालसा रहित में परिपक्व रहने के लिए ज़ोर देकर कहते थे, जिसका परिमाण उनके द्वारा जारी किए हुकमनामों से भली-भांति मिल जाते हैं, जो इस प्रकार है, "मेरा हुकम है जो खालसे दी रहित रहेगा तिसदी गुरू बहुड़ी करेगा।"[४]

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की समदर्शी धार्मिक दृष्टि का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि जहां एक तरफ ज़ालिम हाकिम वज़ीर ख़ान ने जेहाद के नाम पर सिक्ख गुरु साहिबान और सिक्खों के विरुद्ध मुसलमानों को लामबंद होने के लिए भड़काया, वहां बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने इस्लाम धर्म और उसके संचालक हज़रत मुहम्मद साहिब अथवा किसी अन्य इस्लाम के पैगंबर के विरुद्ध एक शब्द भी प्रयोग नहीं किया। उनका संघर्ष ज़ालिम हाकिमों के अत्याचारों के विरुद्ध था। यहां तक कि अत्याचारी हिंदू राजे, सुच्चा नंद जैसे चापलूस और अहंकारी मसंद भी बाबा बंदा सिंघ बहादुर के गुस्से से नहीं बच सके।[५] उनकी नज़रों में हर अमीर, गरीब, सिक्ख, गैर-सिक्ख एक समान था। वे गुरमति गाडी राह के इस सिद्धांत के धारणी थे :

-तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥ . .
एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥
(पन्ना १०८८)

-राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥
(पन्ना ९९२)

बाबा जी वह जुल्म करने वाले को मिसाली सज़ा देते समय उसके रुतबे, जाति, धर्म की प्रवाह नहीं करते थे। इस संदर्भ में भाई केसर सिंघ छिब्बर ने अपने बंसावलीनामे में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की धार्मिक दृष्टि का चरित्र इस प्रकार दर्शाया है :

राजे चुली निआउं की इउ गिरंथ विच लिखिआ लहिआ।
निआउं न करे त नरक जाए। राजा होइ कै निआउं कमाए।
पुरख बचन मुझ को ऐसे है कीता।
मारि पापी मै वैर पुरख दा लीता।
जे तुसी उस पुरख के सिख अखाओ।
ता पाप अधरम अनिआउ न कमाओ।
सिख उबारि असिख संघारो।
पुरख दा कहिआ हिरदे धारो।
भेखी, लंपट, पापी चुनि चारो। (बंद ४३-४५)

इस तरह बाबा बंदा सिंघ बहादुर समदर्शी दृष्टि के धारणी थे। वे जुल्मी राज्य के विरुद्ध ज़रूर थे, ज़ालिमों का नाश करने की वृत्ति वाले भी थे परंतु उनके धर्म, धर्म-ग्रंथों, धर्म-स्थानों, धर्म-मुखियों के विरुद्ध नहीं थे जो संयोगवश मुसलमान और इस्लाम धर्म के पैरोकार थे। अगर ऐसा न होता तो वे परगना बूड़िए के जमींदार जान मुहम्मद ख़ान को सोधने न जाते। यहीं बस नहीं, उन्होंने अपने दल में शामिल हुए मुसलमानों पर हर प्रकार की धार्मिक बंदिशें समाप्त कर दीं, जिसके परिणामस्वरूप कलानौर के क्षेत्र से पांच हज़ार मुसलमान

उनके दल में शामिल हो गए, जबकि मुगल बादशाह बहादुर शाह ने सिंघों के विरुद्ध हुक्म जारी कर दिया था कि वे जहां भी कहीं नज़र आएं कत्ल कर दिए जाएं। इसका परिणाम रबी-उल-अवल ११२३ हिज़्री को उसके पास उसके जासूसों की रिपोर्ट से भी मिलता है जो इस प्रकार है :

"उसने वचन दिया और इक़रार किया है कि मैं मुसलमानों को कोई दुख नहीं दूंगा। चुनांचि जो भी मुसलमान उसकी तरफ रुजू (झुकाव) होता है, वह उसकी दिहाड़ी और पगार नियुक्त कर उसका ध्यान रखता है और उसने यह आज्ञा भी दी हुई है कि मुसलमान नमाज़ और खुतबा अपने मत के अनुसार जैसे चाहे पढ़ें। चुनांचि पांच हज़ार मुसलमान उसके साथी बन गए हैं और सिंघों की फौज़ में बांग तथा नमाज़ का सुख प्राप्त कर रहे हैं।"[६]

उपरोक्त हवाला बाबा बंदा सिंघ बहादुर की उदारवादी और समदर्शी धार्मिक दृष्टि की ऐतिहासिक तथा किंतु रहित मिसाल है। वे किसी भी धर्म के विरोधी नहीं बल्कि दीन और दुखियों के सहारा और बेगुनाहों पर जुल्म करने वालों का नाश करने वाले, सही अर्थों में, सिंघ-शूरवीर, विश्व के प्रसिद्ध फौजी जरनैल और प्रत्येक धर्म, धर्म-ग्रंथ, सच्चे धार्मिक अगुओं तथा धार्मिक स्थानों का सम्मान करने वाले महानायक थे।

स्रोत-सूची :

१. स. करम सिंघ हिसटोरीअन, *'बंदा बहादर'*, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, १९८२, पृष्ठ ५८.

२. डॉ. गंडा सिंघ, *'बंदा सिंघ बहादर'*, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९०, पृष्ठ १४४.

३. उपरोक्त

४. उपरोक्त

५. एम. ए. मैकालिफ, *'दा सिक्ख रिलीज़न एंड इटस गुरूज़'*, एस. चांद एंड कंपनी, दिल्ली, १९५०, पृष्ठ २४८

६. डॉ. गंडा सिंघ, *उपरोक्त*, पृष्ठ १५४.

कविता

प्रभु-नाम का होगा संचार

जब अंधेरा गहराता है, तभी सवेरा आता है।
जब पतझड़ होता पूरा, वृक्षों पर यौवन छाता है।
वर्षा बाद खुले जब अंबर, सूरज अधिक चमकता है।
जब गर्मी बढ़ जाती अंदर, तब ज्वालामुखी फटता है।
बहुत दबाया जाता है तो, गुब्बारा फट पड़ता है।
बहुत सताया जनता को तो, क्रांति-ज्वार सा उठता है।
फल जब ज्यादा पक जाता है, स्वयं पेड़ से गिर जाता।
ज्यों-ज्यों दुख बढ़ता जाता है, दुख का अंत निकट आता।
जब धरती पर पाप बढ़े हैं, प्रभु-प्यारे आते हैं।
मानवता को मुक्ति मिलती, दानवता हर जाते हैं।
जुल्मों का तब चरम आएगा, ज़ालिमों का होगा संहार।
जगेगी भक्ति जन-जन में, प्रभु-नाम का होगा संचार।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। फोन. : ०९४११६०७६७२

छोटा घल्लूघारा

-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल*

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अकाल-चलाने और बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद भी सिक्खों ने दलित-शोषित मानवता की रक्षा के लिए अत्याचारियों के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखा। लाहौर के सूबेदार ज़करिया ख़ान को सिक्खों के खिलाफ़ ज़बरदस्त दमन-चक्र चलाकर भी असफलता ही हाथ लग रही थी। सिक्खों की चढ़दी कला और आत्मविश्वास से ज़ालिम बुरी तरह बौखलाये हुए थे। जहां कहीं भी अत्याचार होता छापामार सिक्ख दस्ते वहां पहुंच कर ज़ालिम को दंड देते। मानवता की रक्षा के लिए युद्ध करने वालों को भी कभी-कभी ज़बरदस्त नुकसान उठाना पड़ ही जाता है। सिक्खों के साथ २ ज्येष्ठ संवत् १८०३ (मई, १७४६ ई) को कुछ ऐसा ही हुआ। इतिहास में यह घटना 'छोटा घल्लूघारा' कहलाती है। 'घल्लूघारा' यानी 'कत्ल-ए-आम'।

सिक्खों की शक्ति से पहले ही नाराज़ चल रहे मुगल साम्राज्य को १७४६ ई में घटी एक घटना ने सिक्खों का कत्ल-ए-आम करने का मौका दे दिया। हुआ यूं कि सिक्खों का एक जत्था पहली पातशाही श्री गुरु नानक देव जी से सम्बंधित पवित्र गुरुधामों के दर्शन करने के लिए ऐमनाबाद गया हुआ था। यहां किसी बात को लेकर एक मुगल लश्कर और सिक्खों के जत्थे में झड़प हो गई। इस मुठभेड़ में लाहौर के दीवान लखपत राय का छोटा भाई जसपत राय मारा गया। भाई की मौत की ख़बर सुनकर दीवान लखपत राय क्रोध से पागल हो उठा। उसने ज़करिया ख़ान के बेटे और तत्कालीन लाहौर के सूबेदार याहिआ ख़ान को सिक्खों पर हमला करने के लिए तैयार किया। इस तरह भारी फौज का लश्कर तैयार किया गया। इस लश्कर को सारे पंजाब में सिक्खों का कत्ल-ए-आम करने का हुक्म दे दिया गया। सिक्ख तो पहले से ही जंगलों में छिपे फिर रहे थे। जो थोड़े-बहुत गांवों में बसे हुए थे वे भी अपनी रक्षा के लिए जंगलों में जा छिपे। बहुत सारे सिक्ख गुरदासपुर ज़िले के काहनूंवान गांव के पास दलदली भूमि वाले जंगल में डेरा डाले हुए थे। मुगल लश्कर को इसकी ख़बर हुई तो उसने काहनूंवान के दलदली छंब को घेरे में ले लिया। सिक्खों को विश्वास था कि मुगल सेना जंगल में प्रवेश नहीं करेगी लेकिन जब लश्कर ने जंगल काटते हुए आगे बढ़ना शुरू कर दिया तो सिक्खों ने खुद को चारों ओर से घिरा पाया। दो तरफ पहाड़, एक ओर रावी नदी और चौथी तरफ भारी फौज. . . अंत में नवाब कपूर सिंघ आदि सेना नायक जत्थेदारों की पहल पर फैसला हुआ कि तेजी से युद्ध करते हुए लश्कर को चीरकर रास्ता बनाते हुए निकला जाये। सिक्खों ने ज़बरदस्त हल्ला बोल दिया। घमासान युद्ध शुरू हो गया। कई मुगल सिपहसालार मारे गये। सिक्खों का भी भारी जानी नुकसान हुआ। हज़ारों सिक्ख शहीद हो गये। इतनी

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

तबाही पर भी सिक्ख बच निकलने में कामयाब हो गये। मुगल लश्कर ने सिक्खों का पीछा किया।

भूखे-प्यासे, घायल, बेहाल सिक्ख मई की भयंकर गर्मी में जैसे-तैसे सतलुज पार करके बरनाला पहुंचे। दीवान लखपत राय के मुगल लश्कर ने सतलुज नदी तक तबाही मचाते हुए सिक्खों का पीछा किया और फिर लाहौर लौट गया। पटियाला रियासत के संस्थापक बाबा आला सिंघ ने सिक्खों की सहायता की। इस प्रकार द्वारा 'छोटा घल्लूघारा' सिक्खों के मानवता के लिए किए जा रहे संघर्ष की भारी कीमत लेता हुआ समाप्त हुआ।

नवाब कपूर सिंघ : अठारहवीं शताब्दी की नितांत विपरीत परिस्थितियों में सिक्खों का नेतृत्व करने वाले महान जत्थेदारों में नवाब कपूर सिंघ का नाम बहुत महत्त्वपूर्ण है। नवाब कपूर सिंघ ने मुगलों के दमन-चक्र में पिस रहे सिक्खों की सन् १७३३ से लेकर १७५३ ई तक अगुवाई की और छोटे घल्लूघारे में ज़बरदस्त जानी नुकसान उठाने वाले सिक्खों को पुन: शक्तिशाली बनाया।

नवाब कपूर सिंघ का जन्म फैज़लपुर नामक गांव में सरदार साधू सिंघ के घर हुआ। किशोरावस्था में पहुंचते ही आप ने भाई मनी सिंघ जी से अमृत छका और सिंघ सज गये। इसके बाद आप जत्थेदार दरबारा सिंघ के जत्थे में शामिल हो गए। लाहौर के सूबेदार ज़करिया ख़ान ने सिक्खों को खुश करने के लिए भाई सुबेग सिंघ के हाथों एक जागीर सरदार दरबारा सिंघ को भेजी तो सर्वसम्मति से यह जागीर सरदार कपूर सिंघ को सौंपी गई और आप नवाब कपूर सिंघ बन गये।

सन् १७३५ ई में जत्थेदार दरबारा सिंघ अकाल चलाना कर गये और सिक्खों के नेतृत्व की समस्त जिम्मेदारी नवाब कपूर सिंघ के हाथों में आ गई। आपने नादिर शाह के आक्रमण, ज़करिया ख़ान और मीर मन्नू के दमन-चक्रों तथा अहमदशाह अब्दाली के साथ झड़पों के समय सिक्खों का कुशल नेतृत्व किया।

बड़े कठिन समय में नवाब कपूर सिंघ ने सिक्खों को संभाला और महज तीन वर्ष में ही उन्हें अहमदशाह अब्दाली के साथ छापामार युद्ध करने लायक शक्तिशाली बना दिया। अनेक युद्धों में सिक्खों का नेतृत्व करते रहने वाले नवाब कपूर सिंघ फैज़लपुरिया सन् १७५३ ई में सिक्खों की कमान स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सौंप कर अकाल चलाना कर गये। आपका अंतिम संस्कार श्री अमृतसर में गुरुद्वारा साहिब बाबा अटल राय के समीप किया गया।

पीर बुद्धू शाह जी

*-स. सिमरजीत सिंघ**

सढौरा एक ऐतिहासिक नगर है जो पाउंटा साहिब से लगभग ७५ किलोमीटर की दूरी पर है। सढौरा नगर शिवालिक की पहाड़ियों की हद पर नाहन (हिमाचल प्रदेश) को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां पहुंचने के लिए अंबाला शहर से नारायणगढ़ के रास्ते या बराड़ा के रास्ते शाहबाद मारकंडा वाली सड़क से जाया जा सकता है। सढौरा कसबा महमूद ग़ज़नवी के समय में आबाद हुआ था। यह नगर शुष्क क्षेत्र में है। यहां कोई दस्तकारी भी नहीं है। इर्द-गिर्द का क्षेत्र भी कम उपजाऊ है। बोधियों के समय यह उनका धर्म-स्थान था, जिसको साधावर कहा जाता था, जो बदलकर साधूबड़ा हो गया।

पुराने समय से ही सढौरा उन यात्रियों का पड़ाव रहा है जो दूसरे पार पहाड़ के बीच वाले तीर्थों को जाया करते थे, जिस कारण इस नगर को 'साधू राही' अर्थात् 'साधू-संतों का मार्ग' कहा जाता था जो समय के साथ बदलता-बदलता 'सढौरा' कहा जाने लगा। पीर बुद्धू शाह जी के इस नगर के निवासी होने के कारण सढौरा पूरी दुनिया भर में मशहूर है।

पीर बुद्धू शाह जी सदा प्रभु-रज़ा में रहने वाले बहुत ही नेक दिल इन्सान थे, जिनका असल नाम सैयद बदरुद्दीन था। पीर बुद्धू शाह जी का जन्म सढौरा के निवासी सैयद गुलाम शाह के घर हुआ था। आप जी का ख़ानदान अच्छा-खासा सैयद ख़ानदान था। आप जी का रुझान ज्यादातर रूहानियत की ओर था। आप जी के ख़ानदान को मुगल राज्य द्वारा जागीर मिली हुई थी। आप बचपन से ही चुपचाप रहने वाले मस्त स्वभाव के मालिक थे। इस कारण लोगों ने आपको बुद्धू शाह कहना शुरू कर दिया। आपके पूर्वज समाणा नगर से आकर सढौरा नगर में आबाद हुए थे। सढौरा में जिस मुहल्ले में आकर रहने लगे वह मुहल्ला सैयदों वाले मुहल्ले के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। पीर बुद्धू शाह जी का निकाह १७-१८ वर्ष की उम्र में शाही सेना के उच्च अधिकारी सैद ख़ान की बहन नसीरां के साथ हुआ। आप जी के घर चार पुत्रों-- सैयद अशरफ, सैयद मुहम्मद शाह, सैयद मुहम्मद बख़्श तथा सैयद शाह हुसैन का जन्म हुआ।

पीर बुद्धू शाह जी की पूरे क्षेत्र में बहुत इज्ज़त थी। पीर बुद्धू शाह जी दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के परम श्रद्धालु थे। जब पीर जी को इस बात का पता चला कि गुरु जी ने नाहन रियासत में पाउंटा साहिब नामक नया नगर आबाद किया है तो उनके मन में गुरु जी के दर्शन की लालसा और बढ़ गई तथा यह लालसा दिन-प्रतिदिन और तीव्र होती गई। एक दिन पीर जी अपने मुरीदों को साथ लेकर पाउंटा साहिब पहुंच गए। गुरु जी के दर्शन कर पीर जी धन्य हो गए। गुरु जी के साथ वचन-विलास कर वे गुरु जी के ही होकर रह गए। गुरु जी के दर्शन कर वे बहुत

*उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।

प्रसन्नचित्त हुए। जब कट्टर मुसलमानों को इस बात का पता चला तो उन्होंने मन में बहुत बुरा मनाया। कई तो उनको 'काफिर' तक कहने लगे। पीर बुद्धू शाह जी तो प्रभु-रंग में रंगी हुई रूह थे। उन्होंने किसी की कोई परवाह न की तथा संगत को गुरु जी द्वारा बताए सच के रास्ते पर चलने की प्रेरणा करते रहे।

एक दिन करनाल के पास गांव दामला के काला ख़ान, भीखण ख़ान, निज़ाबत ख़ान के साथ ७०० के लगभग पठान पीर बुद्धू शाह जी के पास आकर हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि बादशाह औरंगज़ेब ने उनको नौकरी से निकाल दिया है और वे बेरोज़गार होकर टके-टके को तरस रहे हैं। कृप्या उनकी मदद की जाए, नहीं तो उनके बाल-बच्चे भूखे मर जाएंगे। पीर जी उनकी हालत पर तरस खाकर उनको गुरु जी के पास ले आए और कहने लगे, "सच्चे पातशाह जी! आप सच की रक्षा हेतु फौज तैयार कर रहे हैं। उसमें इन पठानों को भी भर्ती कर लें।" गुरु जी ने अपनी पारखू दृष्टि से उनकी तरफ देखा तो सभी ने गर्दनें झुका लीं। गुरु जी समझ गए कि दाल में कुछ काला है, फिर भी उन्होंने पीर जी के सम्मान में उन पठानों में से काले खां, निज़ाबत खां तथा उमर खां को पांच रुपए तथा अन्य को एक रुपए प्रतिदिन की तनख़्वाह पर अपने पास नौकर रख लिया।

भाई वीर सिंघ के अनुसार, "पीर बुद्धू शाह जी के पास जो पठान आए थे वो कहते थे कि औरंगज़ेब ने उनको नौकरी से निकाल दिया है। दरअसल यह एक चाल थी। औरंगज़ेब को गुरु जी की बढ़ रही लोकप्रियता की ख़बरें पहुंच रही थीं तथा औरंगज़ेब को यह भी मालूम था कि पीर बुद्धू शाह जी बहुत ही रहम दिल फ़कीर हैं। वे इन पठानों की चाल में फंस कर इनको अवश्य गुरु जी के पास नौकर रखवा देंगे और जब कभी भी जंग का माहौल बना तो ये पठान जंग शुरू होते ही गुरु जी को धोखा देकर मैदान छोड़कर भाग जाएंगे।"

गढ़वाल के राजा फ़तहि शाह की लड़की की सगाई कहिलूर रियासत के राजा भीम चंद के लड़के के साथ तय हो गई। राजा फ़तहि शाह की श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नाहन के राजा मेदनी प्रकाश के साथ सुलह करवा दी थी परंतु भीम चंद गुरु जी के साथ विरोधता रखता था। जब उसकी रिश्तेदारी राजा फ़तहि शाह के साथ बन गई तो वो खुद को और भी ताकतवर समझने लग गया। वो यह भी जानता था कि राजा फ़तहि शाह गुरु जी का बहुत मान-सम्मान करता है। शादी का न्यौता राजा फ़तहि शाह द्वारा गुरु जी को भेजा गया। इस बात से राजा भीम चंद भड़क गया। बात यहां तक बढ़ गई कि राजा भीम चंद रिश्ते से जवाब देने को तैयार हो गया।

गुरु जी ने पूरे माहौल का अंदाज़ा लगाकर खुद शादी में जाना उचित न समझते हुए दीवान नंद चंद को राजा फ़तहि शाह की लड़की के लिए शगुन एवं तंबोल देकर भेज दिया। राजा भीम चंद ने अपने साथियों से मिलकर दीवान नंद चंद का अपमान करना शुरू कर दिया। दीवान नंद चंद ने बदले हालात को देखकर तंबोल तथा शगुन की वस्तुएं समेटकर पाउंटा साहिब की ओर जाना ही ठीक समझा। राजा भीम चंद ने उसको रास्ते में लूटने की योजना बनाई किंतु दीवान नंद चंद पहले ही चौकस हो चुका था और उसने भीम चंद की एक न चलने दी। दीवान नंद चंद ने आकर

गुरु जी को सारी घटना के बारे में बता दिया। गुरु जी ने हालात का अंदाज़ा लगाकर सिक्ख फौज को तैयार-बर-तैयार रहने का आदेश दे दिया।

राजा फ़तहि शाह अपने बहादुर योद्धा लेकर पाउंटा साहिब पर चढ़ाई करने आ गया। उसने यमुना के किनारे आकर मोर्चे लगा लिए। गुप्तचरों ने गुरु जी को सारी ख़बर बताई। गुरु जी ने सिक्खों को चढ़दी कला में रहने की प्रेरणा दी। लगभग पांच हज़ार सिक्ख एकत्र हो गए। गुरु जी ने इनको हज़ार-हज़ार की पांच टुकड़ियों में बांट दिया। प्रत्येक टुकड़ी का एक जत्थेदार स्थापित कर दिया। गुरु जी ने योजनामयी ढंग से फैसला किया कि पाउंटा साहिब से २० किलोमीटर की दूरी पर भंगाणी के मैदान में दुश्मन फौज के साथ दो हाथ किए जाएंगे।

गुरु जी की तैयार-बर-तैयार लाड़ली फौज ने भंगाणी की ओर कूच किया। जब उन पठानों को पता चला, जो पीर बुद्धू शाह जी की सिफारिश पर गुरु जी की फौज में भर्ती हुए थे, कि जंग होने वाली है तो उनमें से अकेले काले खां को छोड़कर बाकी सभी पठान हरन हो गए। इस सम्बंध में भाई संतोख सिंघ 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में लिखते हैं :

उपालंभ बहु तिसै पठाए। नौकर जे पठान रखवाए।
पावित रहे रोज दरमाहा। धन गन लीनसि अपने पाहा।
अबहि जंग को कारज परयो। देखि गीदीअन को मन डरयो।
लखि राजन की सैन घनेरी। बनि कातुर चढिगै तिस बेरी।

गुरु जी की फौज में संगत उमड़कर पहुंच रही थी। जिसको भी पता चलता था कि फ़तहि शाह गुरु जी पर चढ़ाई करने आया है वो हाथ में जो भी शस्त्र आता, लेकर गुरु जी के साथ आ मिलता। भाई संगो शाह, भाई जीत मल, भाई गुलाब चंद, भाई गंगा राम जैसे शूरवीर गुरु जी की फौज में थे। जंग शुरू होने से पूर्व गुरु जी ने भाई दया राम जी को दुश्मन की फौज की सूचना लाने को भेजा। भाई दया राम जी ने दुश्मन की फौज का जायज़ा लेकर गुरु जी के पास हाज़िर होकर बताया, "पातशाह जी! पीछे की तरफ दुश्मन की फौज कतारें बांधे खड़ी है। वे पठान, जो हमारी फौज से भाग गए थे, दुश्मन की फौज के साथ मिले हुए हैं। वे पठान अब दाईं तरफ गोलाकर रूप में खड़े हैं और हमारे साथ लड़ने को तैयार हैं। सबसे पीछे राजा फ़तहि शाह अपनी फौज के साथ खड़ा है। राजा हरी चंद हंडूरिया सबसे आगे खड़ा है।"

गुरु जी ने सारी स्थिति का जायज़ा ले लिया था। उन्होंने अपने जरनैलों को स्थान बताकर डट जाने को कह दिया। भाई संगो शाह को गुरु जी ने हुक्म दिया कि वो आधी फौज को लेकर आगे की ओर चल पड़े और एक बड़ा रणथम मैदान में गाड़ दिया। सारे योद्धाओं को हुक्म दिया कि कोई भी इससे पीछे न आए।

गुरु जी खुद तीरों के तरकश भरकर ऊंचे टिब्बे पर डट गए, जहां से दुश्मन की फौज पर सीधा वार किया जा सकता था। जंग शुरू हो गई। पीर बुद्धू शाह जी के पास पठानों द्वारा गद्दारी करने की ख़बर पहुंच चुकी थी। ख़बर मिलते ही पीर जी अपने ७०० मुरीदों एवं चार पुत्रों तथा भाइयों को साथ लेकर जंग के मैदान में पहुंच गए।

उन्होंने गुरु जी की फौज के साथ मिलकर दुश्मन फौज में भगदड़ मचा दी। पीर जी ने यमुना के किनारे वाली तरफ शत्रु दल की खूब पिटाई की। पहाड़ी राजाओं के पांव उखड़ गए। इस युद्ध में पीर बुद्धू शाह जी के दो पुत्र अशरफ शाह तथा मुहम्मद शाह, एक भाई भूरे शाह सहित अनेकों मुरीद शहीदियां प्राप्त कर गए। गुरु जी की फौज में महंत किरपाल दास, लाल चंद हलवाई अपने खुरचने तथा कुतके के साथ ही दुश्मनों का सफाया करते जा रहे थे। जब महंत किरपाल दास ने अपने घोड़े पर बैठे ही ऊपर की ओर उठकर दोनों हाथों से लाठी को पकड़कर हयात खां के सिर पर मारा तो वह वहीं गिर पड़ा। यह देखकर दुश्मन की फौज में भगदड़ मच गई। दुश्मन फौज हैरान थी कि गुरु जी के सिक्ख लाठियों के साथ ही सफाया करते जा रहे हैं।

गुरु जी के सिक्खों ने जीत के निशान साहिब झुला दिए। गुरु जी इस जंग में शहीद हुए सिक्खों के मृत शरीर उठवाकर पाउंटा साहिब ले आए और उनका अपने हाथों से अंतिम संस्कार यमुना नदी के किनारे किया। पीर बुद्धू शाह जी भी आ गए। पीर बुद्धू शाह जी की बहादुरी एवं वफादारी से खुश होकर गुरु जी ने कहा, "पीर जी! आपकी कुर्बानी को सिक्ख पंथ हमेशा याद रखेगा। आपने सच के लिए अपने भाई, पुत्र तथा मुरीद कुर्बान किए हैं। हम आप पर खुश हैं। आप मांगो जो चाहते हो! हम आपकी मांग पूरी करके दिल से खुशी महसूस करेंगे।"

पीर जी गुरु जी के वचन सुनकर दोनों हाथ जोड़कर कहने लगे, "हे दो जहान के मालिक सच्चे पातशाह जी! आप जी का दिया हुआ बहुत कुछ है। आप जी जिसको इतना मान-सम्मान दो उसको और क्या चाहिए? अगर आप तुट्ठे (दयालु) हो तो अपने शीश के कीमती रोम जो आपके कंघे में हैं, बख़्श दो!"

यह कहते हुए पीर जी ने दोनों हाथों की अंजुलि-सी बनाकर गुरु जी के आगे कर दिए। पीर जी की मांग पर गुरु जी ने अपने पवित्र केशों सहित कंघा पीर जी को बख़्श दिया।

पीर बुद्धू शाह जी द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की भंगाणी की जंग में मदद करने के फलस्वरूप दुश्मनों द्वारा बादशाह औरंगज़ेब के बहुत कान भरे गए। पहाड़ी राजाओं ने एकत्रता बुलाकर अपनी पराजय के कारणों पर विचार की। राजा फ़तहि शाह ने इस बात का भेद बताया कि पीर बुद्धू शाह जी अपने सगे-सम्बंधियों तथा मुरीदों सहित गुरु जी की मदद हेतु आये थे, जिससे पहाड़ी फौज को दोनों तरफ से लड़ना पड़ रहा था इसी कारण उनकी पराजय हुई है।

राजा फ़तहि शाह को यह सूचना उसके एक भरोसेयोग्य गुप्तचर ने दी थी। इस बात पर सहमत होकर पहाड़ी राजाओं ने बादशाह औरंगज़ेब को दिल्ली में शिकायत लिखकर भेज दी। पीर बुद्धू शाह जी के रिश्तेदार सैद खां को पता चला तो उसने यह शिकायत बादशाह के पास न पहुंचने दी। सरहिंद के फौजदार ने सढौरा के हाकिम उस्मान ख़ान को पीर जी को कत्ल करने के आदेश दे दिए। पीर बुद्धू शाह जी को सरकार की साजिश का अंदाज़ा हो गया था, इसलिए उन्होंने अपना सारा परिवार नाहन तथा समाणा भेज दिया। उस्मान ख़ान ने पीर जी को बहुत ही बेदर्दी से टुकड़े-टुकड़े कर कत्ल करवा दिया था।

सन् १७१० ई. में जब बाबा बंदा सिंघ

बहादुर सढौरा आए तो उन्होंने सढौरा पर हमला करके उस्मान ख़ान को फांसी पर लटकाकर उसे उसके किए की सज़ा दी। यहां के मुसलमानों ने बाबा जी की अधीनगी स्वीकार कर ली और उनकी हर आज्ञा का पालन करने का भरोसा दिलाया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उन पर एतबार करके उनके साथ शुभचिंतकों जैसा व्यवहार करना शुरू कर दिया, किंतु इन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ धोखा किया। इन्होंने सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खां को एक गुप्त पत्र भेजकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर के विरुद्ध योग्य कार्यवाही करने की विनती करने की सलाह बनाई तथा अपना पूरा सहयोग देने का वादा करके यह पत्र बांस की पोरी में छिपाकर एक घुड़सवार द्वारा वज़ीर खां के पास पहुंचाने की कोशिश की। एक सिक्ख को उन पर शक होने की वजह से उनसे पोरी छीनकर ज़ोर से धरती पर फेंकी जिसके कारण वो टूट गई तथा उसमें से छिपा पत्र निकलकर सिक्खों के हाथ लग गया। यह पत्र बाबा बंदा सिंघ बहादुर के सामने पेश किया गया। उन्होंने सढौरा के सारे मुसलमानों को एकत्र किया तथा उनसे पूछा कि धोखा देने वालों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ? सबने एक आवाज़ में कहा कि उनको मृत्यु के घाट उतार देना चाहिए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने तुरंत एलान कर दिया कि पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले सारे आदमियों को मृत्यु के घाट उतार दिया जाए। जिस स्थान पर उन सारे दगाबाज़ों को सज़ा दी गई, उस स्थान का नाम कत्लगढ़ी पड़ गया। आजकल इस स्थान पर जैन हाई स्कूल चल रहा है।

सढौरा फ़तहि करने के बाद उस स्थान पर एक किले का निर्माण करवाया गया, जिसमें हर वक्त फौज तैनात रहती थी। इस किले से बाबा बंदा सिंघ बहादुर का मुकाम लोहगढ़ लगभग सात-आठ किलोमीटर की दूरी पर था। आजकल इस किले के कुछ निशान ही शेष हैं।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सढौरा फ़तहि करने के बाद वहीं किले का निर्माण करने के उपरांत खालसाई निशान साहिब झुला दिया। यह निशान साहिब बहुत ही पावन माना जाता है। हर वर्ष इसका चोला बदला जाता है और भारी मात्रा में संगत बहुत ही उत्साह से एकत्र होती है। जिन व्यक्तियों को बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने इस निशान साहिब की देखभाल के लिए नियुक्त किया था वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसकी सेवा-संभाल करते आ रहे हैं। वे श्री अमृतसर ज़िले के हैं। किले के मुख्य द्वार के सामने बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने एक गुरुद्वारा साहिब भी बनवाया था तथा बहुत सारी ज़मीन उसके नाम लगवाई थी। सढौरा से बाहर पूरब दिशा की ओर एक गुरुद्वारा साहिब का निर्माण किया जा रहा है। इसके साथ ही एक छोटा-सा कुआं है।

इस नगर की आबादी सन् १९४७ ई में भारत के विभाजन से पहले पंद्रह हज़ार के करीब बताई जाती थी। सन् १९४७ में हुए विभाजन के समय मुसलमान आबादी पाकिस्तान चली गई थी। उनमें से कुछेक लोग माहौल शांत होने के बाद फिर यहां वापिस आ गए थे।

सढौरा में सिक्खों की आबादी बहुत कम है। यहां के कुछेक सिक्खों ने मिलकर पीर बुद्धू शाह जी की याद में गुरुद्वारा साहिब का निर्माण करने का साहसिक कार्य किया है। एक सिक्ख अलाटी से जगह खरीदकर यह गुरुद्वारा साहिब बनाया गया है।

सैयद बदरुद्दीन असमारूफ (पीर बुद्धू शाह) की बंसावली

शाह निज़ामुद्दीन
।
शाह अब्दुल हमीद, गंज-ए-इलम (जिसका मजार ईदगाह में है)
।
शाह अब्दुल वाहाब अकताब (इसका मकबरा महल्ला सवानीआ मस्जिद में है)
।
सैयद अब्दुल हमीद
।
शाह अली असगर
।
राजा शाह इब्राहीम बाला
।
सैयद मुहम्मद अशरफ
।
सैयद गुलाम शाह (भंगाणी के युद्ध में शहीद हुए)
।
सैयद बदरुद्दीन असमारूफ (पीर बुद्धू शाह)
।
सैयद शाह हुसैन-सैयद मुहम्मद बख़्श-सैयद मुहम्मद शाह-सैयद अशरफ शाह

सैयद अता शाह (सैयद शाह हुसैन से)
।
सैयद मुहम्मद हुसैन-सैयद आलम शाह-सैयद मलिक हुसैन

सैयद मकसूदुल हुसैन (सैयद मुहम्मद हुसैन से)

सैयद मनजूर हुसैन (सैयद आलम शाह से)
।
सैयद शराफत हुसैन (ये झंग पाकिस्तान चले गए थे)

सैयद मसीह हुसैन (सैयद मलिक हुसैन से)
।
सैयद हैदर हुसैन
।
सैयद नातक हुसैन-सैयद शफीह अली-सैयद इलम हुसैन (ये क्रांची चले गए थे)

सैयद इमाम शाह (सैयद अशरफ शाह से)
।
सैयद तसद्दुक हुसैन-सैयद तहव्वर हुसैन
।
सैयद मुहम्मद हमीद
।
सैयद मुनव्वर हुसैन-सैयद ज़फर हुसैन-सैयद तसव्वर हुसैन-सैयद नज़र हुसैन (ये झंग पाकिस्तान चले गए थे)

मन की निर्मलता बनाम श्रम की महानता

-*डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

सिक्ख धर्म मूलतः जीवन को नये सिरे से देखने और समझने का धर्म है, जिसने कई पुरातन मान्यताओं को बदलने का साहस भरा, जो सदियों से चली आ रही थीं और मनुष्य को माया-मोह में डालने तथा कर्मकांडों में उलझाने वाली सिद्ध हो रही थीं। गुरु साहिबान ने मनुष्य को समानता का अधिकार दिलाने में बड़ी अहम भूमिका निभाई जो तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था पर गहरी चोट थी। वर्ण-व्यवस्था का सबसे बड़ा अवगुण समाज को आज्ञा देने वालों और आज्ञा का पालन करने वालों को आपस में बांट देना था। आज्ञा देने वाले निठल्ले और अकर्मण्य होने के बावजूद एक तथाकथित जाति विशेष से सम्बंध के कारण सम्मान और सत्कार के अधिकारी हो गये थे। उन्हें आजीविका की कोई चिंता नहीं थी और उनके निजी कार्यों के लिए सेवकों की कतार थी। आज्ञा का पालन करने वाले दिन-रात खटते, भांति-भांति के कार्य-रोज़गार करते, फिर भी तिरस्कार सहन करते और अभावग्रस्त जीवन ही व्यतीत करते। वे कई उन अधिकारों से वंचित थे जो कथित उच्च वर्ग को हासिल थे। अन्याय, शोषण करके लोग शान से रह रहे थे और दिन-रात श्रम करने वाले दुखों में जीवन बिता रहे थे। श्री गुरु नानक साहिब ने सच और सम्मान के लिए भाई लालो जी जैसे श्रम करने वालों के पक्ष में खड़े होकर मलिक भागो जैसे निठल्लों को उनकी वास्तविक जगह बताने का युगांतरकारी साहस किया, जिसने समाज के परिदृश्य को बदल दिया। समाज में दाता बन बैठे वर्ग का अहंकार और भ्रम तोड़ते हुए श्री गुरु नानक साहिब ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप को सामने रखा जो सभी का सृजक और पालक है। उसकी सृजना में समानता की दृष्टि को गुरु साहिब ने विस्तारपूर्वक संसार को अवगत कराया।

एका सुरति जेते है जीअ ॥
सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥ (पन्ना २४)

परमात्मा ने सब को एक जैसा तन और तन के भीतर एक जैसी अवस्था दी है जो उनके मध्य समानता का सबसे बड़ा और सबल आधार है। जाति, वर्ण, समुदाय के आधार लोगों ने बनाये हुए हैं जो परमात्मा की दृष्टि के विरुद्ध हैं। समाज में दुख, संताप, विरोध इसी कारण हैं क्योंकि समाज की व्यवस्था परमात्मा की दृष्टि और उसके न्याय के विरुद्ध चल रही है। शारीरिक श्रम करने वालों को हेय माना जाता है। श्री गुरु नानक साहिब ने दो टूक शब्दों में कहा कि तथाकथित उत्तम, नीच की समाज द्वारा बनाई गई सारी परिभाषायें निरर्थक और सारहीन हैं क्योंकि सभी जीव परमात्मा के बनाये हुए और उसकी संतान हैं :

ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ (पन्ना ५०४)

गुरु साहिब ने मानवीय समानता और सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए सांसारिक शक्तियों को सिरे से नकारते हुए कहा कि संसार

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: +९१९४१५९-६०५३३

में हुक्म मात्र परमात्मा का चलता है और सभी पर चलता है। कोई भी ऐसा नहीं है जो उसके हुक्म के अधीन न हो :

कुदरति करनैहार अपारा ॥
कीते का नाही किहु चारा ॥
जीअ उपाइ रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥ (पन्ना १०४२)

गुरु साहिब ने परमात्मा को अथाह शक्तियों का स्वामी बताया जो सृष्टि को अपनी सोच व इच्छा से चला रहा है और उसकी यह इच्छा सर्वोच्च है। इस पर किसी का कोई वश नहीं है। कोई उसकी इच्छा पर सवाल उठाने की सामर्थ्य नहीं रखता। वही सब जीवों को जन्म दे रहा है, पालन-पोषण कर रहा है। यह उस तथाकथित उच्च वर्ग का मिथक तोड़ने वाला गंभीर संदेश था जो स्वयं को निम्न वर्गों के पालक के रूप में पेश कर रहे थे और इस भ्रम का लाभ उठाकर अमानवीय कृत्य करने में संलग्न थे। इस मिथक को तोड़ने के लिए ही श्री गुरु नानक साहिब ने अभिमानी ज़मींदार मलिक भागो के पकवान स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था।

गुरु साहिब ने जहां मानवीय समानता के मूल्यों को आगे बढ़ाया वहीं उस श्रम को आदरणीय माना जो ईमानदारी और लगन से किया जाये। वर्ण-व्यवस्था में तथाकथित क्षत्रिय और ब्राह्मण वर्ग ने राज्य करने और धर्म-कर्म खुद करने के अधिकार को अपने तक सीमित कर रखा था। तथाकथित वैश्य समुदाय व्यापार और वाणिज्य में लगा हुआ था। अन्य सभी कार्य निम्न कहे जाने वाले वर्ग के कंधों पर आन पड़े थे। गुरु साहिबान की दृष्टि थी कि परमात्मा की शरण में जाने से ही उद्धार है और यह शरण सभी के लिए है। परमात्मा की शरण में ज्ञान, समृद्धि, मान है :

सोई गिआनी जि सिमरै एक ॥
सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥
सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥
सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥ (पन्ना ११५०)

गुरु साहिबान ने मनुष्य के सारे गुणों और सारी सामर्थ्य को परमात्मा की कृपा से जोड़ मनुष्य के सारे कार्यों को आदरणीय बना दिया और सभी मनुष्यों को समान रूप से सम्मान का अधिकारी बना दिया। मनुष्य का अंतर शुद्ध हो तभी उसके कर्म शुद्ध और फलदायी होंगे।

पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ ॥
अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥
गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ॥
नानक त्रिसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥ (पन्ना ७९८)

मनुष्य का निर्मल मन उसे अंतर की शांति और सुख तो देता ही है, संसार में भी उसके सुखों का निमित्त बनता है। जिसके मन में परमात्मा की महिमा बस रही है वह उसके कर्मों में भी व्यक्त होती है और उसके कर्मों की श्रेष्ठता को सुनिश्चित बनाती है। मनुष्य वही कर्म करता है जो परमात्मा के गुणों के अनुकूल होते हैं :

सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥(पन्ना ३९७)

वर्तमान में यह सबसे स्वर्णिम सिद्धांत है कि मनुष्य श्री गुरु अरजन देव जी के उपरोक्त निर्देश का अक्षरश: पालन करे। आज भ्रष्टाचार, अनाचार और कर्त्तव्यहीनता का वातावरण मानवता का दम घोंट रहा है। लोगों का विश्वास चूक गया है। ईमानदारी से श्रम करके जीविका-अर्जन करना लोग भूलते जा रहे हैं और ऐसे कर्मों की ओर उन्मुख हो रहे हैं जो

त्वरित लाभ वाले हों भले ही उसके लिए अंतर की निर्मलता का क्षय हो और असत्य को धारण करना पड़े। मन की निर्मलता को त्याग कर किए गये कर्म कभी भी सुखदायक नहीं होते और उनका फल भोगना ही पड़ता है :

बाबा बोलीऐ पति होइ ॥
ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥ *(पन्ना १५)*

मनुष्य ऐसे काम करे जिससे उसकी मर्यादा और सम्मान बना रहे। वह कौन-से कार्य करे और कैसे करे इसका निर्णय उसके मन की निर्मलता और परमात्मा पर आस्था और समर्पण ही करता है। यदि मनुष्य ने मन से परमात्मा को दृढ़ता से धारण किया हुआ है तो उसके कर्म भी श्रेष्ठ होंगे और उसे इहलोक में ही नहीं परलोक में भी सम्मान मिलेगा। मन का परमात्मा के मार्ग से विचलित होना उसके कर्मों में भी प्रकट होता है, जिससे मनुष्य को दंड भोगना पड़ता है। गुरु साहिबान ने अवधारणा स्थापित की है कि मनुष्य श्रम करे और मात्र श्रेष्ठ कर्म करे। श्रेष्ठ कर्म को सरलता से परिभाषित करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी ने कहा कि जिन कर्मों से मनुष्य को भविष्य में अथवा परमात्मा के समक्ष शर्मिंदा होना पड़े ऐसे कर्म मनुष्य न करे। कर्म, श्रम की इस अद्वितीय व्याख्या से हर वह श्रम और श्रम करने वाला श्रेष्ठ हो जाता है, जिसके मूल में परमात्मा का चिंतन और उद्देश्य में पवित्रता हो। ऐसा कर्म कोई भी हो और उसे करने वाला कोई भी हो इससे खास अंतर नहीं पड़ने वाला। श्री गुरु रामदास जी श्री गुरु अमरदास जी के दामाद थे। (समाज में दामाद का आज भी विशिष्ट स्थान माना जाता है।) इसके बावजूद वे श्री गोइंदवाल साहिब में बाउली के निर्माण हेतु सिर पर मिट्टी के टोकरे ढोते रहे। जब उनके परिवार के लोगों ने इस पर आपत्ति जाहिर की तो श्री गुरु अमरदास जी ने कहा था कि "श्री गुरु रामदास जी के सिर पर गारे, मिट्टी की टोकरी नहीं वरन् दीन दुनिया का छत्र है। मानवीय श्रम की तुलना दीन दुनिया की बादशाहत से करना श्रम का सबसे बड़ा सम्मान है जो संसार में आज तक नहीं हुआ। इससे भी अधिक महत्त्व की बात यह है कि यह गुरुत्व की परीक्षा की कसौटी बना और आगे चल कर श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी पर आसीन किया।

बाबा बुड्ढा जी को उनकी आत्मिक उन्नति के कारण ब्रह्मज्ञानी कहा गया और श्री गुरु नानक साहिब ने स्वयं उन्हें अपार सम्मान का हकदार बनाते हुए उनसे श्री गुरु अंगद देव जी की गुरुता की रस्में करवाई थीं। यह परंपरा अंत तक चली जिसे बाबा बुड्ढा जी के वंशजों ने भी निभाया। ऐसे महान बाबा बुड्ढा जी जीवन के अंतिम चरण में ठट्ठा गांव में रहकर गुरु-घर की सेवा किया करते थे। गुरु-घर की सेवा वे बड़ी श्रद्धा और प्रेम से करते थे। जब श्री अमृतसर नगर बसाया गया तो श्री गुरु रामदास जी ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के कुशल कारीगरों, रोज़गार करने वालों को सम्मान सहित बुलावा भेज कर श्री अमृतसर बुलाया और यहां बसने में उनकी सहायता की। इसके साथ ही सिक्खों को भी उद्योग, व्यापार के लिए प्रेरित किया गया। यह समाज के आर्थिक विकास की दिशा में बहुत बड़ा कदम था।

आज के आर्थिक विकास की अवधारणा और गुरु साहिबान के चिंतन में मौलिक अंतर है। गुरु साहिबान ने जिस श्रम, रोज़गार की बात की वह मानवीय समानता को स्थापित

करने वाला और अंतर की शुचिता से अनुप्राणित था।

गिआन विहूणा गावै गीत ॥
भुखे मुलां घरे मसीति ॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

श्री गुरु नानक साहिब ने उपरोक्त वचन में सांसारिक लोभ-मोह वश किए जा रहे कर्मों और अंतर की शुद्धता से अभिभूत होकर किए जाने वाले श्रम में अंतर किया। उन्होंने कहा कि श्रम की सर्वाधिक अवज्ञा धर्म जगत में हो रही है। धर्म के नाम पर नाना कर्म किए जा रहे हैं और जीविका के लिए अन्य सांसारिक लोगों पर आश्रित होना पड़ रहा है जो अकर्मण्यता, अज्ञानता और अधर्म है। ऐसे लोग कदापि सम्मान के योग्य नहीं हैं। वे वास्तव में जानते ही नहीं हैं कि धर्म क्या है और कर्त्तव्य क्या है। ईश्वर ने मनुष्य को जो तन दिया है इसकी सार, संभाल मनुष्य को स्वयं करनी है, जिसके लिए श्रम आवश्यक है। इसी लिए गुरु साहिबान ने परिवार, समाज, संसार के त्याग का निषेध किया था, वन, कंदराओं में, पर्वतों पर वास, हठ, व्रत आदि को व्यर्थ बताया था। उन्होंने तन की साधना के स्थान पर मन की साधना की बात की, जिसे साधने से जग को जीता जा सकता है और यह संसार, समाज और घर में रह कर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए किया जा सकता है। गुरु साहिबान ने इन दायित्वों, श्रम को उस मन से जोड़ा जो परमात्मा के साथ ही जोड़ा जा सकता है।

मनु कुंचरु काइआ उदिआनै ॥
गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ॥
राज दुआरै सोभ सु मानै ॥ (पन्ना २२१)

अपने मन को साधना अति आवश्यक है। मन पर गुरु के ज्ञान का अंकुश होना चाहिए, जो विकारों को जीत लेना और परमात्मा की शरण में जाने की युक्ति सिखाता है। इस ज्ञान से मनुष्य निर्लिप्त और निर्विकार हो जाता है। उसके अंदर का स्व नष्ट हो जाता है और वह प्रभु का हो जाता है। जो प्रभु का है तथा प्रभु जैसा और प्रभु के अनुकूल ही व्यवहार करता है। वह जो कुछ अर्जित करता है उससे औरों की सहायता करने की ललक रखता है, जैसी दानवृत्ति और उपकार की भावना परमात्मा में प्रकट हो रही है। श्रम वह है जिससे मनुष्य खुद के साथ-साथ अन्य का भला करने में भी समर्थ हो। गुरु साहिबान द्वारा चलाई गई दसवंध की रीति इस राह को पुष्ट करने वाली है। दसवंध मात्र आर्थिक मदद नहीं गुरसिक्ख की उस दृष्टि का भी परिचायक है जो मानवीय समानता और सम्मान के लिए प्रेरित करने वाली है। यह अतुलनीय है जिसे धारण करके संसार आज तमाम समस्याओं से मुक्त हो सकता है और श्रेष्ठ समाज की रचना की ओर अग्रसर हो सकता है। हर श्रम करने वाला प्राणी मन को परमात्मा के भय में रखकर श्रम करे तो यह हमारे समाज के विकास का उत्तम बीज-मंत्र होगा। इसके बिना आर्थिक नीतियों के दोष भोगने के लिए हम विवश रहेंगे।

गुरबाणी में ब्रह्म-ज्ञान

*-डॉ. नरेश**

गुरबाणी में फरमान है-- *"ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥"* ब्रह्मज्ञानी के मन में परोपकार का उमाह (उत्साह) होता है। कारण यह कि उसका चिंतन-मनन ब्रह्मज्ञानी को बताता है कि सृष्टि के प्रत्येक प्राणी के साथ उसका एक सम्बंध है, एक रिश्ता है, क्योंकि उसके भीतर भी वही आत्मा मौजूद है, जो मेरे अंदर है। इस नाते से सृष्टि का प्रत्येक प्राणी मेरा सगा है। अपनों की भलाई के लिए, अपनों के कल्याणार्थ, अपनों की सहायता के लिए कुछ भी करना मानव-प्रकृति है। ब्रह्म-ज्ञान हो जाने पर परोपकार उसके लिए दिखावा-मात्र नहीं रहता। किसी दूसरे के लिए कुछ भी करने का उत्साह उसे परमार्थ में प्रवृत्त करता है तथा परमार्थ का प्रत्येक प्रयास उसे परम आनंद देता है। यही उसके उमाह का प्रेरक तत्त्व है।

ज्ञान किसी को दिया नहीं जा सकता, केवल शिक्षा या विद्या दी जा सकती है। विद्या ज्ञान तब बनती है, जब वो स्वानुभूत हो जाती है। किसी के द्वारा भी ब्रह्म (प्रभु) के विषय में कुछ भी बताया जाए, बताने वाला अपना ब्रह्म-विषयक ज्ञान ही क्यों न बता दे, यह देने वाले का ज्ञान ही रहेगा, लेने वाले का नहीं। लेने वाले का ज्ञान तब बनेगा, जब वह इसका अनुभव स्वयं कर लेगा। इसीलिए गुरु केवल मार्गदर्शन करता है, रास्ता बताता है, रास्ते पर चलने की विधि बताता है, लेकिन चलना शिष्य को स्वयं ही होता है। शिष्य जब पूरी निष्ठा के साथ, पूर्ण समर्पण-भाव के साथ ब्रह्म-मार्ग का पथिक बनता है तो उसका मस्तिष्क उसके मन या विवेक के साथ उलझना छोड़ देता है। तब उसे जो भी अनुभव होता है, वह उसका अपना ज्ञान होता है। शिष्य का स्वानुभव गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान का सत्यापन करता है, तब शिष्य ज्ञानी बनता है। गुरबाणी ब्रह्मज्ञानी को परिभाषित करती है :

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥

(पन्ना २७२)

जिसके मन में केवल सत्य बसता है, जिसकी वाणी सदा सत्य बोलती है, जो ब्रह्म के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं जानता, श्री गुरु अरजन देव जी कहते हैं कि वही ब्रह्मज्ञानी है।

सत्य क्या है? जो ब्रह्मज्ञानी के हृदय में बसता है। यही कि समस्त आत्माएं परमात्मा का अंश हैं, जिन्हें विभिन्न प्रकार के शरीर प्रदान करके कर्म के बंधन में बांध दिया गया है। व्यक्ति जिस प्रकार के कर्म करता है, उसी के आधार पर उसके अगले जन्म का निर्धारण होता है। कुछ मतावलंबियों के अनुसार इन समस्त आत्माओं को ब्रह्म एक दिन अपने में समेट लेगा, वापिस बुला लेगा। जिस दिन ऐसा होगा उसी दिन का नाम 'महाप्रलय', 'कयामत' 'डूम्सडे' आदि रखा गया है। गुरमति के अनुसार वास्तविकता यह है कि जो आत्माएं प्रबुद्ध हैं।

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

**१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९*

भाई संतोख सिंघ जी के बारे में प्राप्त खोज

*-डॉ. धरम सिंघ**

महाकवि भाई संतोख सिंघ मध्यकाल के सिक्ख इतिहास, विशेषत: गुर-इतिहास, गुरमति विचारधारा, आध्यात्मिक दर्शन तथा प्रचंड विद्वता का टकसाली नमूना थे। वे संस्कृत के पंडित, ब्रज भाषा में निपुण तथा उच्च कोटि के कवि और पंजाबी संवेदना के गहन ज्ञाता थे। सिक्ख जगत के चुनिंदा गुरसिक्खों, जो इत्तफाक से लेखक भी थे, जैसे भाई गुरदास जी, भाई नंद लाल जी तथा भाई मनी सिंघ जी आदि के साथ भाई संतोख सिंघ जी का नाम बहुत सम्मान सहित लिया जाता है। भाई साहिब के द्वारा रचित ग्रंथों में सबसे प्रसिद्ध "श्री गुर प्रताप सूरज" ग्रंथ है, जिसकी कथा गुरुद्वारा साहिब में पुराने समय से होती आ रही है।

पचास हज़ार से अधिक बंदों में लिखे गए उपरोक्त ग्रंथ में ऐतिहासिक प्रसंग अपनी-अपनी जगह महत्त्वपूर्ण हैं, किंतु अगर संक्षिप्त में एक ही बात करनी हो तो भाई जी द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के भारतीय समाज, इतिहास एवं संस्कृति को दिए गए योगदान के बारे में लिखा गया एक कबित्त देखना ही काफी होगा। इस बंद में भाई संतोख सिंघ जी बयान करते हैं कि अगर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी न होते तो भारतीय अथवा हिंदू समाज व संस्कृति का कुछ भी शेष नहीं बचना था :

छाइ जाती एकता अनेकता बिलाइ जाती,
होवती कुचीलता कतेबन कुरान की।
पाप ही प्रपक जाते धरम धसक जाते,
बरन गरक जाते सहित बिधान की।
देवी देव देहुरे संतोख सिंघ दूर होते,
रीत मिट जाती कथा बेदन पुरान की।
श्री गुरू गोबिंद सिंघ पावन धरम सूर,
मूरत न होती जउ पै किरपा निधान की।

भाई संतोख सिंघ जी १९वीं शताब्दी के प्रथम मध्य के इतिहासकार थे। इतिहास लेखन का एक सीधा-सा सिद्धांत है कि उस वक्त तक किसी भी विषय पर लिखे गए स्रोत ग्रंथ इकट्ठा किए जाएं। उनके अध्ययन के उपरांत परिणाम निकाले जाएं तथा उनका अपने कोण तथा मंशा के मुताबिक व्याख्यान कर दिया जाए। भाई संतोख सिंघ जी ने "श्री गुर प्रताप सूरज" तथा 'श्री गुर नानक प्रकाश' ग्रंथों में यही विधि अपनाई है तथा उस समय तक जितने भी ग्रंथ गुरमुखी अक्षरों में उपलब्ध थे, उन सभी स्रोतों से सहायता ली है।

भाई संतोख सिंघ जी द्वारा रचित ग्रंथों 'श्री गुर नानक प्रकाश' तथा 'श्री गुर प्रताप सूरज' को कुछ विद्वानों ने इतिहास का नाम दिया है, कुछेक ने ऐतिहासिक काव्य तथा कुछेक ने इसे इतिहास का मिथिहासीकरण कहा है। किंतु सच यह है कि सिक्ख इतिहास पर खोज करने वाला कोई भी व्यक्ति भाई संतोख सिंघ जी को अनदेखा नहीं कर सकता। अनेक पुस्तकें ऐसी देखने को मिलती हैं जो उपरोक्त ग्रंथों की सरल व्याख्या व टीके हैं। यह अलग बात है कि किसी लेखक ने आधार ग्रंथों के रूप में इनका नाम

**भूतपूर्व अध्यक्ष, पंजाबी अध्ययन स्कूल, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, फोन: +९१९८८८९-३९८०८*

दिया है और किसी ने नहीं। सिक्ख इतिहास के बारे में "श्री गुर प्रताप सूरज" ग्रंथ के हवाले देना साधारण बात है। इसके महत्त्व को स्वीकृत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस ग्रंथ के पुन: संपादन का कार्य हाथों में ले रखा है।

भाई संतोख सिंघ जी की महिमा तो काफी पुरानी है, किंतु खोज कर्त्ताओं का ध्यान इसकी ओर ज्यादा नहीं गया। बीसवीं सदी के आरंभ में "सिंघ सभा लहर" के प्रभाव के अधीन सिक्ख इतिहास के बारे में नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से खोज होने लगी। भाई संतोख सिंघ जी के बारे में खोज का सबसे पहले काम भाई वीर सिंघ जी द्वारा उनके ग्रंथ का संपादन है। यह संपादित ग्रंथ १९३४ ई. में 'खालसा समाचार' द्वारा चौदह जिल्दों में छापा गया। पहली जिल्द भूमिका या प्रस्तावना की है जबकि बाकी तेरह जिल्दों में अर्थों तथा टिप्पणियों सहित मूल पाठ है। प्रस्तावना में भाई वीर सिंघ जी ने भाई संतोख सिंघ जी की कोई सदीवी तथा उचित यादगार कायम न होने के कारण सिक्ख कौम के प्रति गिला भी किया था। इससे उत्साहित होकर ओरीएंटल कॉलेज, लाहौर के पंजाबी अध्यापक ज्ञानी खज़ान सिंघ ने भाई संतोख सिंघ जी की यादगार कायम करने तथा इसके बारे में खोज करने का कदम उठाया। इनके प्रयत्नों सदका भाई संतोख सिंघ जी के पैतृक गांव नूर दी सरां में गुरुद्वारा साहिब के रूप में यादगार कायम हुई। गांव का नाम बदलकर 'किला कवि संतोख सिंघ' रखा गया तथा १९६६ ई. में ज्ञानी खज़ान सिंघ की संपादित पुस्तक "जीवन कथा चूड़ामणि कवि संतोख सिंघ जी" प्रकाशित हुई। इस प्रकार खोज की बात शुरू हो गई। खोज के ये दोनों प्रयत्न उपाधि निर्पेक्ष थे। स. पिआरा सिंघ पदम की पुस्तक "महाकवि संतोख सिंघ" (१९६४ ई) भी इसी श्रेणी में रखी जा सकती है। आरंभिक प्रयत्न होने के कारण खोज में इनका अपना महत्त्व है।

भाई संतोख सिंघ जी के बारे में उपाधि सापेक्ष खोज कार्य डॉ. जय भगवान गोयल के हिंदी खोज प्रबंध "नानक प्रकाश और गुर प्रताप सूर्य के काव्य तत्वों का अध्ययन विशेषत: छंद और अलंकार की दृष्टि से" से होता है, जो उन्होंने अपनी पी. एच. डी. की डिग्री के लिए कुरुक्षेत्र यूनीवर्सिटी, कुरुक्षेत्र को १९६४ ई. में पेश किया तथा जो १९७० ई में पुस्तकीय रूप में छपा। डॉ. गोयल की भाई साहिब के बारे में खोज की दो अन्य लिखी पुस्तकें भी हैं : "गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" संक्षिप्त तथा "महाकवि भाई संतोख सिंघ" (१९९२ ई)। पीएच. डी. स्तर पर ही अंग्रेजी में हुआ डॉ. साबिंदरजीत सिंघ सागर का खोज कार्य Historical Analysis of Nanak Parkash गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर द्वारा १९९३ ई. में प्रकाशित हुआ। उपाधि सापेक्ष खोज में अगला कार्य डॉ. रुपिंदर कौर (काहलों) का भाई संतोख सिंघ जी कृत तथा भाई वीर सिंघ जी द्वारा संपादित "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" (१४ जिल्दें) का सम्बंध सूचक विषय सूची, सहित भाई वीर सिंघ जी के सटिप्पण संपादन के जो "महाकवि भाई संतोख सिंघ रचित श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ की अनुक्रमणिका" नाम के अधीन पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला द्वारा १९९८ ई. में छप चुका है। इस प्रकार मेरी जानकारी के अनुसार हिंदी, अंग्रेजी तथा पंजाबी में तीन शोध प्रबंध प्रवान होकर प्रकाशित हो चुके हैं। इसके समानांतर उपाधि निर्पेक्ष खोज भी जारी है। इस शृंखला में डॉ. हरमीत सिंघ की संपादित पुस्तक "भाई संतोख

सिंघ दा रचना संसार" (१९९१ ई) है। इस पुस्तक के निबंध वास्तव में पंजाबी अकादमी, दिल्ली द्वारा भाई साहिब के बारे में करवाई गई एक संगोष्ठि में पढ़े एवं विचारण किए गए खोज-पत्र हैं। ये इतिहासकारी, दर्शन, काव्य कला तथा भाषा की दृष्टि से लिखे हुए हैं। भाई संतोख सिंघ जी के ग्रंथों में भिन्न-भिन्न प्रकार की इतनी सामग्री है कि इनमें से और कई खोज-विषय ढूंढे जा सकते हैं। मध्यकालीन पंजाबी साहित्य के बारे में खोज करनी दिन-ब-दिन दुष्वार हो रही है तथा यदि उत्साही व समर्थवान खोजकार भाई संतोख सिंघ जी के बारे में खोज को हाथ डाल सकें तो वे इसमें से अवश्य ही कुछ मौलिक तथा सार्थक ढूंढने के योग्य हो जाएंगे।

इंजी: स. करमजीत सिंघ द्वारा संपादित "साहित गगन दे सूरज : महाकवि भाई संतोख सिंघ" पुस्तक भाई संतोख सिंघ जी के जीवन, समकालीन इतिहास, साहित्य सेवा, काव्य कौशलता तथा इतिहास दृष्टि पर खोज में एक महत्त्वपूर्ण बढ़ौतरी है। स. करमजीत सिंघ का अपना क्षेत्र तो चाहे इंजीनीयरिंग तथा तकनीकी शिक्षा है किंतु अपने दिवंगत पिता स. रणजीत सिंघ खड़ग की रचनाओं को योग्य ढंग से संपादित करने, छापने तथा विद्वानों के साथ मेल-जोल ने उनके अंदर भी खोज करने की अलख जगा दी है। यह पुस्तक इसी अलख और शौक का प्रतिफल है। इसमें लगभग २५ निबंध हैं। इनमें से छ: निबंध दिवंगत रणजीत सिंघ खड़ग की कलम से हैं। ये सभी महाकवि भाई संतोख सिंघ जी की शख़्सियत, जीवनीमूलक विवरणों, तत्कालीन इतिहास, साहित्य सेवा, काव्य कला तथा इतिहास दृष्टि के बारे में हैं। इन निबंधों में खड़ग जी ने भाई जी के बारे में मिलते प्रत्येक तथ्य की छानबीन कर उसके सम्बंध में अपना निर्णय दिया है। एक सुयोग्य खोजकार की भांति उन्होंने प्रत्येक पूर्व खोजकार के साथ संवाद रचाकर बहुत उचित शब्दों में अपनी धारणा पेश की है। संक्षिप्त में कहना हो तो ये छ: निबंध ही पुस्तक का मूल आधार हैं। अन्य निबंध इनमें पेश किए नुक्तों का विस्तार हैं। दिवंगत भाई खड़ग सिंघ को भाई संतोख सिंघ जी के बारे में खोज की लगन ज्ञानी खज़ान सिंघ ने लगाई, क्योंकि दोनों के मन में भाई जी की देन की बहुत कद्र थी। ज्ञानी खज़ान सिंघ खुद भी भाई संतोख सिंघ जी के बारे में एक पुस्तक तैयार करके छपवा चुके थे तथा उनको यह प्रेरणा भाई वीर सिंघ जी द्वारा प्राप्त हुई। ज्ञानी खज़ान सिंघ के बारे में इस पुस्तक में स. रघबीर सिंघ (भरत) का एक बढ़िया आलेख शामिल है जो खोज की दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान है। स. रणजीत सिंघ खड़ग के बारे में भी तीन जीवनीमूलक निबंध हैं। डॉ. हरमीत सिंघ, डॉ. गुरमुख सिंघ, डॉ. राम मूर्ति, डॉ. राजिंदर सिंघ, डॉ. आशा नंद वोहरा, डॉ. हरबंस कौर (सग्गू) तथा ज्ञानी बिशन सिंघ आदि लेखकों के निबंध भी हैं भाई संतोख सिंघ जी के बारे में। इंजी. स. करमजीत सिंघ के तीन निबंध भाई संतोख सिंघ जी की रचनाओं, 'महान कोश' में मिलते "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" के हवालों तथा भाई जी की भाषायी निपुणता के बारे में हैं। इंजी. स. करमजीत सिंघ ने भाई संतोख सिंघ जी के बारे में ज्यादातर हर तरह की सामग्री की समीक्षा करने के उपरांत इस पुस्तक में नये प्रसार जोड़ने का प्रयत्न किया है। यह पुस्तक पहले हुए खोज कार्य में निश्चय ही महत्त्वपूर्ण बढ़ोतरी है। ☸

इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट का आविष्कार सन् २००३ में एक चीनी औषधि-विक्रेता हॉन लिक ने किया था। उन दिनों यह व्यक्ति 'गोल्डन ड्रेगन होलडिंग्ज़' नामक कंपनी में काम करता था। इस कंपनी का नाम अब 'रुयान' है, जो कि सन् २००५ से इस यंत्र का निर्यात कर रही है। इस यंत्र का लघु नाम ई-सिगरेट (E-Cigarette) है। इसमें एक नली होती है। मुंह में डालने वाले ऊपरी भाग को माउथपीस कहते हैं। ई-सिगरेट के निर्माता इसे 'कारतूस' (Cartridge) कहते हैं। इस नली में विभिन्न मात्राओं में घुला हुआ तंबाकू का विष (Absorbent Nicotine) भरा जाता है। इस विषैले रस को भाप बनाने वाले और नली के भीतर रखे गए यंत्र को परमाणुकरण कला यंत्र (Atomizer) कहते हैं। इसमें एक बहुत ही हल्की धातु-निर्मित बैटरी (Lithium-ion battery) होती है। ये दोनों यंत्र तंबाकू के विषैले तत्व (Nicotine) को घुलाने में सहायक होते हैं। ट्यूब के भीतर गए तंबाकू के विषैले तत्व (Nicotine) को ई-लिक्विड अथवा "ई-जूस" भी कहते हैं, जो कि सैंकड़ों स्वाद वाले (Hundreds of Flavors) होते हैं।

लंदन के लुयिसविले विश्वविद्यालय के हृदय-धमनी औषधि विभाग (Cardiovascular Medicine Department) की अध्यक्षा डॉ अरुणा भटनागर का मत है कि भले ही ई-सिगरेट में धुएं वाले सिगरेट से नशीले तत्व कम हैं, फिर भी इसमें विद्यमान तंबाकू का विषैलापन प्रयोगकर्ता के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

इंग्लैंड के मिडल और हाई स्कूलों के चालीस हज़ार बच्चों, जो कि बड़ी अवस्था के लोगों की तरह ई-सिगरेट को हानि रहित समझकर पीते हैं, ने बताया कि उनमें से अधिकांश लोग सांस के रुकने और इससे जुड़ी बीमारियों से परेशान रहते हैं। ऐसी हानिकारक बातों को देखकर अमेरिका की हृदय रोग संस्था ने सुझाव दिया है कि छोटी उम्र के बच्चों को दुकानदार इन्हें न बेचें।[१]

ब्लूम वर्ग के स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ के वैज्ञानिक जॉन हॉपकिंस का कहना है कि ई-सिगरेट की भाप सूंघने से एक ही कस में १०१४ तंबाकू के मूल विषैले तत्व मनुष्य के शरीर में घुस जाते हैं, जो कि धमनियों से संचार करने वाले रक्त-कणों को हानि पहुंचा सकते हैं। ई-सिगरेट चाहे खुलेआम पीया जाए अथवा किसी बंद कमरे में, उसका हानिकारक प्रभाव स्वयं के साथ-साथ पास में बैठे व्यक्ति पर भी होता है। ई-सिगरेट में भरे जाने वाले दम तथा अन्य रोग-निवारक औषधियों से युक्त तंबाकू के विषैले तत्वों वाले यंत्रों का चूहों पर प्रयोग करके उपर्युक्त वैज्ञानिक ने ये तथ्य प्रकट किए हैं।[२]

दक्षिण-पूर्व एशिया की विश्व स्वास्थ्य संस्था की क्षेत्रीय निर्देशिका पूनम खेत्रपाल सिंह का कथन है कि सन् २००५ में तंबाकू के विषैले

*१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)

तत्वों को बैटरी की शक्ति से भाप बनाकर सूंघने वाली सामग्री का विश्व व्यापार ३० खरब रुपए का था। इस सामग्री में लगभग आठ हज़ार सुगंधियों का प्रयोग होता है, जिनका स्वाद फलों और मुरब्बों की खुशबू जैसा होता है। इसके कारण किशोरों में ई-सिगरेट का प्रचलन बढ़ जाने से सेवन-कर्ताओं की संख्या सन् २०१२ में सन् २००८ की तुलना में दुगनी हो गई। ऐसे बहुत से प्रमाण मिले हैं कि तंबाकू का विषैला तत्व भले ही केवल सिगरेट के धुएं के रूप में न हो, फिर भी मां के गर्भ में पल रहे बच्चे तथा किशोरों के मानसिक विकास में परोक्ष रूप से सूंघने के कारण बाधक बनता है। यही नहीं, इसकी मात्रा भी तंबाकू से भरे गए सिगरेट और चुरुट जितनी ही होती है।

इन सभी कारणों से सिंगापुर और ब्राज़ील की सरकारों ने ई-सिगरेट के निर्माण पर प्रतिबंध लगा दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र की शाखा ने जुलाई, २०१४ में भारत में आयोजित गोल मेज़ सम्मेलन में विचार-विनिमय के पश्चात् तथा रूस की राजधानी मॉस्को में अक्तूबर, २०१४ में हुए तंबाकू नियंत्रण सम्मेलन में यही सुझाव दिए कि घरों, कार्य-स्थलों तथा खुलेआम ई-सिगरेट पर प्रतिबंध लगाने के अतिरिक्त विज्ञापनों द्वारा इनके प्रयोग के प्रचार पर भी रोक लगाई जाए।[३]

संदर्भ-सूची :

1. Times of India, Mumbai; 26th August, 2014 (Konteya Sinha : U.S. Health body Classifies e-cigs as cigarettes.)

2. Ibid, 6th February, 2015 (Konteya Sinha: E-Cigarettes as bad for lungs as traditional ones.)

3. Ibid, 10th October, 2014 (Poonam Khetrapal Singh: only a smoke screen, Electronic Cigarettes are not entirely harmless and need to be regulated.)

गुरबाणी में ब्रह्म-ज्ञान

(पृष्ठ ३८ का शेष)

वे कर्मबंध नहीं बनाती हैं और शरीर के रहते ही ब्रह्म के साथ अपना तादात्म्य बना लेती हैं; उसके साथ अपना सम्बंध बना लेती हैं; नश्वर, भौतिक शरीर का परित्याग करते ही ब्रह्म में लीन हो जाती हैं और छोटी ज्योति (आत्मा) बड़ी ज्योति (परमात्मा) में जाकर विलीन हो जाती है। ऐसा तभी समझ आता है यदि हमारे मन में गुरबाणी का संदेश, सार-तत्त्व समाया हुआ हो। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का फरमान है :

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ (पन्ना ६३३)

कर्मबंध न बनें, इसका एकमात्र उपाय मन-वाणी को सत्य पर केंद्रित रखना है। गुरबाणी ने ब्रह्मज्ञानी की परिभाषा को व्याख्यायित करते हुए उसे सदा निर्लेप, सदा निर्दोष, समदर्शी, धैर्यवान, निर्मलतम, मन: प्रकाश, ऊंचे से ऊंचा, बंधनमुक्त, ज्ञानभक्षी, नामाधारित, अचिंत, ब्रह्मवेत्ता तथा सर्व का धनी कहा है।

गुरबाणी चिंतनधारा : १००

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

पउड़ी ॥
आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥
अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥ (पन्ना ४६४)

इस पउड़ी में श्री गुरु नानक पातशाह ने भोगों (विकारों) में गलतान हुए मन को प्रबोधित किया है। साथ ही यह स्पष्ट किया है कि इन्सान को अपने कर्मों का फल उस मालिक की दरगाह में जाकर अवश्य ही भोगना पड़ता है। अत: मनुष्य को कर्म करते हुए सुचेत रहना चाहिए अन्यथा पछतावा ही शेष रह जाता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जीव (इन्सान) सांसारिक पदार्थों को भोगता हुआ मर कर राख की ढेरी हो जाता है और जीवात्मा परलोक सिधार जाती है अर्थात् पांच तत्वों से बना शरीर मिट्टी की ढेरी हो जाता है और जीवात्मा परलोक गमन कर जाती है। जीव को मृत्यु अपने जंजीर रूपी पंजों में जकड़ आगे लगा लेती है अर्थात् अपनी पकड़ में ले लेती है। प्रभु-दरगाह में केवल जीव के किए कर्मों पर ही विचार होती है अर्थात् मातलोक में जीव ने अच्छे या बुरे जो-जो काम किए होते हैं, उनका लेखा-जोखा होता है और उसे अच्छी तरह समझा दिया जाता है कि तूने कितने अच्छे और कितने बुरे काम किए हैं। जीव को उसके द्वारा किए हुए बुरे कर्मों की सज़ा मिलती है। उस सज़ा से बचने का उसे कोई बहाना या ठिकाना नहीं मिलता। उसका रोना-धोना अर्थात् पश्चाताप करना कोई नहीं सुनता। कहने से अभिप्राय, परमात्मा की दरगाह में जीव द्वारा किए कर्मों का फल जीव को स्वयं ही भोगना पड़ता है। वहां उसकी कोई बात पूछने वाला या दुख बंटाने वाला नहीं होता। अत: हे मूर्ख मन! यह बेशकीमती जीवन तूने व्यर्थ ही गंवा लिया।

इस पउड़ी में जीव को गुरु पातशाह ने सुचेत किया है कि जीव का अपने ही कर्मों के अनुसार निर्णय होना है। अत: जीव को मातलोक में कर्म करते हुए अत्यधिक सुचेत रहने की आवश्यकता है। गुरबाणी कर्म फिलासफी पर ज़ोर देती है। जपु जी साहिब में भी श्री गुरु नानक साहिब ने यही समझाया है कि हे जीव! परमेश्वर की दरगाह में तेरे प्रत्येक कर्म का हिसाब-किताब होना है। वहां पर न्याय करने वाला प्रभु स्वयं है :

करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥ (पन्ना ७)

गुरबाणी में स्पष्ट हिदायत है कि इस संसार (कर्म-भूमि) में जीव मन-वचन-कर्म से जिस तरह के भी कर्म करेगा उसे संस्कार रूप में उकेर कर अपने साथ परलोक लेकर जायेगा :

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

कपडु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥
(पन्ना ४७०)

जब अपने किए कर्मों का फल आप ही भोगना है तो कर्म रूपि बीज बुरे क्यों बोए जाएं? गुरबाणी इस संदर्भ में भी हमारा मार्गदर्शन करती है :

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ (पन्ना ४७४)

लोक प्रचलित कहावत है "बोए पेड़ बबूल का तो आम कहां ते होए।" ठीक इसी तरह कोई विष बोकर अमृत प्राप्त नहीं कर सकता। गुरबाणी हमें बीज बोते समय अर्थात् कर्म करते हुए सुचेत रहने के लिए प्रेरित करती है अन्यथा हम सारा जीवन दूसरों को दोष देते रहेंगे :

ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ ॥
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥ (पन्ना ४३३)

वास्तव में गुरबाणी की एक पंक्ति पर भी हम पूर्ण तौर से अमल करें तो हमारा लोक-परलोक सफल हो जाये। अत: ज़रूरत है तो बस कर्म करते हुए सुचेत रहने की अन्यथा अवसर चूक जाने पर बंदे के पास पछताना ही शेष रह जाता है, जैसा कि इस पउड़ी की अंतिम पंक्ति में समझाया गया है कि मालिक की दरगाह में हमारे द्वारा मातलोक में किए गए कर्मों का हिसाब-किताब होगा और अगर हमारे लेखे में बुरे कर्मों की अधिकता हुई तो हमारे पास हमारा साथ देने वाला कोई नहीं होगा। जिनके लिए बुरे कर्म किए वे भी नहीं, केवल हम ही जवाबदेह होंगे। हमें इस तथ्य से मुंह नहीं फेरना चाहिए। गुरु-चरणों में अरदास करें ताकि हम नेक कर्म करते हुए सहजता से नेक फल के भागीदार बन जायें और हमारा जीवन सफल हो जाए।

सलोक म: १ ॥
भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥
भै विचि धरती दबी भारि ॥
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥
भै विचि राजा धरम दुआरु ॥
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥
भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥
भै विचि आडाणे आकास ॥
भै विचि जोध महाबल सूर ॥
भै विचि आवहि जावहि पूर ॥
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक देव जी ने प्रकृति के कण-कण को परमेश्वर के भय रूपि हुक्म के नियम में कार्यरत देखा है, यहां तक कि बड़े-बड़े सिद्ध पुरुष, देवता, योगी आदि तथा महाबलि, शूरवीर, योद्धा भी उसके भय में ही विचरण करते हैं। उसी के भय में अर्थात् हुक्म में ही जन्म-मृत्यु का खेल निरंतर चलता है। केवल अकाल पुरख ही भय से रहित निर्भय स्वरूप है। सबके माथे पर भय नियम का लेख लिखने वाला भी परमेश्वर आप ही है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि (यह अटल सच्चाई है कि प्रकृति की प्रत्येक वस्तु उस परमेश्वर के भय में कार्यरत है) सदैव चलने वाली हवा परमेश्वर के भय में बह रही है अर्थात् हवा का चलना प्रभु के भय रूपि नियम में है। लाखों दरिया (नदियां) परमेश्वर के भय में चल रहे हैं। अग्नि (आग) भी प्रभु के भय रूपि हुक्म में सृष्टि के जीवों की सेवा

कर रही है। प्रभु के हुक्म में ही धरती बेअंत भार में दबी पड़ी है। परमेश्वर के भय में ही इंद्रराज (बादल) आकाश मंडल में जल का भार उठा कर घूम रहा है। धर्मराज का दरबार भी ईश्वर के भय में कार्यरत है। चंद्रमा और सूर्य भी उसी के भय में ही करोड़ों मील का सफर तय करते हैं। सिध, बुध, देवता तथा नाथ भी परमेश्वर के भय में ही हैं और यह जो आकाश ऊपर तना हुआ है अर्थात् विस्तृत फैला हुआ आसमान है, यह भी ईश्वर के भय में ही है। बड़े-बड़े बलशाली योद्धा, शूरवीर, सूरमें भी परमेश्वर के भय में हैं। समस्त जीव-जंतुओं के समूह संसार में प्रभु के भय में ही जन्म-मरण के चक्कर में हैं। समस्त प्राणियों के माथे पर प्रभु-भय का लेख लिखा हुआ है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि केवल सदैव स्थिर (कायम) रहने वाला अकाल पुरख ही पूर्णतया भय से मुक्त है अर्थात् सदा कायम रहने वाले प्रभु को किसी भी तरह का डर नहीं है।

वस्तुत: प्रकृति का प्रत्येक कण, हरेक जन सर्वकला समर्थ प्रभु के नियमाधीन है, उसके भय में है और उसके द्वारा लागू नियमों में ही कार्य कर रहा है। एक इन्सान ही है जो प्रकृति के नियमों को तोड़ने की गुस्ताखी करता है और फिर उसके दुखद परिणाम भी भोगता है।

परमेश्वर के भय के बिना भक्ति नहीं हो सकती और विवेक जागृत नहीं होता। भक्त शेख़ फरीद जी की पावन बाणी हमारा मार्गदर्शन करती है कि अगर सचमुच परमेश्वर ने तुझे सबसे ज्यादा समझ बख़्शी है तो तू बुरे कर्म करने छोड़ दे। दूसरों को उपदेश देना तो सरल है, लेकिन कठिन है उन पर स्वयं अमल करना। दूसरों के दोष देखना बड़ा सरल है, कठिन है अपने दोष देखना और उन्हें दूर करने के लिए प्रयास करना। जो अपने गिरेबान में झांक कर जीवन बसर करते हैं कह सकते हैं कि वही प्रभु-भय में हैं :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

गुरबाणी के बेशकीमती संदेशों को अगर हम श्रद्धा एवं प्रेम-भावना से पढ़-सुनकर अमल में लायेंगे तभी हमारा यह मानव जीवन सफल हो सकेगा। ईश्वर का भय हमें दुनिया में निर्भय बना देता है जबकि दुनिया का व्यर्थ भय हमें कायर बना देता है और लोकाचार एवं व्यर्थ के आडंबरों, कर्मकांडों में गलतान कर देता है। ईश्वर के भय से मनुष्य भक्ति की ओर प्रवृत्त होता है, जिससे उसे आत्मिक बल मिलता है। प्रभु के भय में बंदा नेक कर्मों में लगा हुआ, प्रभु-बंदगी करता हुआ अपना लोक-परलोक सफल कर लेता है।

मः १ ॥
नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥
केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥
केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥
बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥
गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥
जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥
गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥
करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ *(पन्ना ४६४-४६५)*

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने केवल परिपूर्ण परमेश्वर अकाल पुरख को ही निर्भय स्वरूप माना है और यह स्पष्ट किया है उसके समक्ष सभी तुच्छ हैं और समस्त प्रकार की सियानपें भी तुच्छ हैं। अत: उस

निरंकार को जानने की चेष्टा तो मात्र नटों एवं बाज़ीगरों की भांति नृत्य करना ही है। इस शरीर पर पहने गए कीमती आभूषणों की क्या कीमत जबकि शरीर ही अंततः राख की ढेरी हो जायेगा। प्रभु-ज्ञान केवल बातों एवं फोकट कर्मों से नहीं बल्कि कड़ी (कठिन) साधना है और यह प्रभु-कृपा से ही संभव है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे नानक! परिपूर्ण परमेश्वर ही भय से (पूर्णतया) रहित है। श्री रामचंद्र जी तथा श्री कृष्ण जी भले अपने युग के महापुरुष थे, मगर थे सभी प्रभु के अधीन ही; प्रभु के भय में ही। (प्रभु-ज्ञान के मुकाबले) वेदों आदि के ज्ञान भी कोई महत्ता नहीं रखते यदि मन में प्रभु-भय नहीं। परमेश्वर का ज्ञान हासिल करने हेतु मनुष्य नटों (बाज़ीगरों) की भांति नृत्य करते हैं, भिखारी बन कर बार-बार नाचते हैं तथा ताल ठोकते हैं। रासधारिये (रास-लीला करने वाले) बाज़ारों में आकर रास-लीला करते हैं। वे राजे-रानियों के स्वांग बना कर गाते हैं और लोगों को प्रभावित करने हेतु अनाप-शनाप (मनगढ़त) बातें बोलते हैं। कानों में कीमती गहने और गले में हार डालते हैं। तन पर ये बेशकीमती गहने (आभूषण) पहनते हैं। वे यह नहीं जानते कि जब इस शरीर ने ही भस्म होकर राख की ढेरी बन जाना है तब इस पर पहने कीमती आभूषणों का क्या प्रयोजन? ज्ञान (प्रभु-भक्ति) को बातों से नहीं पाया जा सकता अर्थात् कर्मकांडों से प्रभु की प्राप्ति मुमकिन नहीं है। प्रभु-प्राप्ति का वर्णन करना अत्यंत कठिन कार्य है। प्रभु का ज्ञान तो प्रभु-कृपा से ही संभव है। अन्य चतुराइयां (सियानपें) तथा हुक्म चलाना आदि व्यर्थ ही हैं।

उपरोक्त सलोक में कुछ विशिष्ट तथ्यों की ओर कलयुगी जीवों का ध्यान आकर्षित किया गया है। पहला तथ्य, ईश्वर एक है तथा सर्वकला समर्थ है। उसके द्वारा अनेकों ही रहबरी पुरुष हुए हैं। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने स्पष्ट किया है कि प्रभु-रज़ा में कितनी ही हवाएं, जल तथा अग्नियां हैं। कितने ही ब्रह्माओं की सृजना होती है। कितने ही इंद्र, चंद्रमा, सूर्य तथा तारा-मंडल हैं। अनेकों ही शक्तियां साधने वाले सिद्ध पुरुष, महापुरुष, महान अवस्थाओं वाले योगी आदि हैं। ज्ञानवान को ही मालिक सूझ बख़्शता है। उसे ही बेअंत की अनंत कुदरत का अनुभव होता है :

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ . .
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
(पन्ना ७)

दूसरा तथ्य यह कि इन महापुरुषों की कथाओं के आधार पर कई लोग अनेकों स्वांग रचाते हैं। लोक कथाओं के आधार पर हार-श्रृंगार भी करते हैं। ये सब उदर पूर्ति के साधन-मात्र हो सकते हैं। ये लोगों का मनोरंजन तो कर सकते हैं लेकिन इसके द्वारा ईश्वर को प्रसन्न नहीं किया जा सकता और न ही प्रभु का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तीसरा तथ्य यह कि आत्मिक ज्ञान न बातों से और न ही नाटक, चेटकों से संभव है। वह तो केवल ईश्वर की रहमत, दया-दृष्टि, ईश्वरीय ज्ञान से ही मुमकिन है। जब हृदय-घर में गुरु-कृपा से ज्ञान का दीपक जल उठता है तब अज्ञान का तिमर (अंधेरा) दूर हो जाता है, यथा :

पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥
सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिआ ॥
(पन्ना १४९)

कलयुगी जीवों के उद्धार हेतु श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं :

नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥
(पन्ना ४६७)

स्पष्ट है कि मात्र बातों से न योग मुमकिन है और न ही ज्ञान की प्राप्ति। वास्तव में जिन्हें प्रभु-ज्ञान की प्राप्ति हुई है उनकी आत्मिक अवस्था बहुत ऊंची हो जाती है। वे किसी को यह भेद नहीं देते, यथा गुरबाणी-प्रमाण है :

सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥
(पन्ना १३८४)

पउड़ी ॥
नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥
एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥ (पन्ना ४६५)

उपरोक्त पउड़ी में गुरु नानक पातशाह ने गुरु की महिमा का गायन किया है। परमेश्वर की जब जीव पर कृपा होती है तो उसे पूर्ण गुरु की प्राप्ति होती है और पूर्ण गुरु के माध्यम से ही सत्य का रहस्य सही रूप से समझ में आता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे अकाल पुरख वाहिगुरु जी! अगर आप जीव पर रहमत भरी दृष्टि करो तो आपकी कृपा-दृष्टि से सतिगुरु मिल जाता है। यह जीव अनेकों जन्मों में भटक चुका था। जब आपकी रहमत इस जीव पर हुई तब सतिगुरु ने इसे अपना शबद (उपदेश) श्रवण करवाया। हे समस्त लोकों के प्राणी! ध्यानपूर्वक सुनो! सतिगुरु सदृश्य और कोई दाता नहीं। जिन जीवों ने अपने अंत:करण से अहंकार गंवा दिया है, उन्हें ही सतिगुरु के मिलने से सच्चे परमेश्वर की प्राप्ति हो गई है। सतिगुरु समर्थ है जिसने जीव को सत्य स्वरूप प्रभु की सूझ-बूझ प्रदान करवा दी है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु साहिब ने इस गूढ़ रहस्य को स्पष्ट कर दिया है कि जब तक जीव के अंदर अहं भाव की लेश-मात्र भी मौजूदगी है तब तक प्रभु कहीं दिखाई नहीं देता अर्थात् यूं प्रतीत होता है कि मैं ही हूं और कोई है ही नहीं। गुरु-कृपा से अहं भाव का पर्दा हट जाता है तथा प्रभु की सर्वव्यापकता का बोध सहज ही हो जाता है। बिना गुरु की रहमत से परमेश्वर को पाना या उसकी सर्वव्यापकता का बोध होना नामुमकिन है :

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ (पन्ना ४६६)

गुरु ही है जो हरि-नाम की औषधि देता है; अवगुणों से बचने हेतु परहेज़ भी बताता है। जैसे शारीरिक रूप से कोई मरीज़ है तो उसे उचित औषधि के साथ-साथ परहेज़ भी डॉक्टर द्वारा बताया जाता है। डॉक्टर के निर्देशानुसार चल कर बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार गुरबाणी में गुरु को वैद्य भी बताया गया है, जिसके निर्देशानुसार जीवन में विचरण करते हुए समस्त सांसारिक रोगों से मुक्त हुआ जा सकता है :

मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥ (पन्ना ६१८)

ख़बरनामा

विदेशों में बसते सिक्खों को दरपेश चुनौतियों के बारे में जांच-पड़ताल करने हेतु सब-कमेटी गठित

श्री अमृतसर : ९ अप्रैल : विदेशों में बसते सिक्खों पर हो रहे नसली हमलों के समाधान हेतु शिरोमणि गु: प्र: कमेटी द्वारा सिक्ख जत्थेबंदियों तथा सिक्ख बुद्धिजीवियों की बुलाई गई एकत्रता में प्राप्त सुझावों को विचारने तथा उनकी समीक्षा करने के लिए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर ने एक सब-कमेटी का गठन किया है। इस कमेटी के को-आर्डीनेटर की जिम्मेदारी स. दिलजीत सिंघ अतिरिक्त सचिव को सौंपी गई है। सब-कमेटी के सदस्यों में स. रजिंदर सिंघ महिता, कार्यकारिणी सदस्य, डॉ किरपाल सिंघ हिस्टोरीअन, स. तरलोचन सिंघ भूतपूर्व सदस्य पार्लियामेंट, प्रो. प्रिथीपाल सिंघ भूतपूर्व उप-कुलपति गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, डॉ. बलकार सिंघ भूतपूर्व प्रोफेसर पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, डॉ. बलवंत सिंघ भूतपूर्व प्रोफेसर गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी अध्यक्ष, सिक्ख इतिहास विभाग, खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर, डॉ. हरचंद सिंघ भूतपूर्व प्रोफेसर गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, डॉ जसबीर सिंघ साबर, भूतपूर्व प्रोफेसर गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, डॉ सरबजिंदर सिंघ तथा डॉ परमवीर सिंघ पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, डॉ. रूप सिंघ सचिव शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, बाबा हरनाम सिंघ खालसा, मुखी दमदमी टकसाल, बाबा बलबीर सिंघ मुखी शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल, स. तेजा सिंघ निरमले खुड्ढा कुराला, प्रिं. राम सिंघ, स. जसविंदर सिंघ एडवोकेट, स. प्रताप सिंघ लुधियाना, डॉ. धरमिंदर सिंघ उब्भा, बीबी प्रभजोत कौर चंडीगढ़ (एडवांस सिक्ख स्टडीज) तथा डॉ. गुरबचन सिंघ बचन के नाम शामिल हैं।

ज़िक्रयोग्य है कि जत्थेदार अवतार सिंघ ने विदेशों में बसते सिक्खों को दरपेश चुनौतियों के बारे में बुद्धिजीवी वर्ग, स्कॉलरों, निहंग सिंघ दलों, सिक्ख संप्रदाओं, शैक्षणिक संस्थाओं के प्रिंसीपलों तथा सिक्ख धार्मिक जत्थेबंदियों के मुखियों, सिंघ सभाओं, सेवा सोसायटियों व अन्य सिक्ख गणमान्य लोगों की एकत्रता स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल में विचार-विमर्श करने हेतु बुलाई थी। इसके बाद जत्थेदार अवतार सिंघ ने एकत्रता में पहुंचे सुझावों के आधार पर सब-कमेटी का गठन किया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि यह सब-कमेटी प्रमुख शख़्सियतों द्वारा आए सुझावों की जांच-पड़ताल करने के बाद रिपोर्ट पेश करेगी तथा इसके उपरांत शिरोमणि गु. प्र. कमेटी आगे की कार्यवाही करेगी।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा उठाए गए मुद्दों के बारे में आस्ट्रेलिया सरकार को सूचित करेंगे : जेम्स गिल्बर्ट

श्री अमृतसर : ९ अप्रैल : मिस्टर जेम्स गिल्बर्ट असिस्टेंट डायरेक्टर विदेशी मामले तथा व्यापार, आस्ट्रेलिया श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर नत्मस्तक हुए। उनके साथ मिस्टर आरी नागर सेकंड सेक्रेटरी आस्ट्रेलियन हाई कमिशन तथा नई दिल्ली में स्थित आस्ट्रेलियन हाई कमिशन की रीसर्च आफीसर श्रीमती अदिती मनोहर ने भी शमूलियत की। उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब के

दर्शन करने के उपरांत कार्यालय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी में जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के साथ एक विशेष मुलाकात की तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की समस्त कारगुज़ारी की जानकारी हासिल की।

स. हरचरन सिंघ, मुख्य सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने मिस्टर जेम्स गिल्बर्ट को जत्थेदार अवतार सिंघ के कुशल प्रबंध तले चलाए जा रहे गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध, विद्यार्थियों को प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा प्रदान करने हेतु खोले गए स्कूलों, कॉलेजों तथा यूनीवर्सिटियों एवं समस्त मानवता की भलाई हेतु खोले गए अस्पतालों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने मिस्टर जेम्स गिल्बर्ट को बताया कि अपने गुरु साहिबान द्वारा बख़्शे सेवा के सिद्धांत पर चलते हुए यह संस्था दूर-दूरस्थ से आई संगत को मुफ्त लंगर तथा रिहायश मुहैया करवाती है। उन्होंने बताया कि अकेले श्री हरिमंदर साहिब में ही प्रतिदिन ७० से ८० हज़ार तथा गुरुपर्व व अन्य पावन दिवसों पर लगभग सवा से डेढ़ लाख की संख्या में संगत गुरु का लंगर छक कर तृप्त होती है। उन्होंने कहा कि सिक्खों की इस सिरमौर संस्था द्वारा जहां अपने अस्पतालों में कैंसर तथा अन्य घातक बीमारियों से पीड़ित मरीज़ों को हर प्रकार की विशेष डॉक्टरी सुविधा देने के साथ-साथ उनकी आर्थिक मदद भी की जाती है वहीं देश के किसी भी हिस्से में आई प्राकृतिक आपदा के समय बिना किसी भेदभाव के पीड़ितों को हर प्रकार की डॉक्टरी तथा अन्य आवश्यक सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं। मिस्टर जेम्स गिल्बर्ट द्वारा पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि देश-विदेश में बसते पूरे सिक्ख समुदाय की सिरमौर संस्था होने के नाते शिरोमणि गु. प्र. कमेटी विदेशों में बसते सिक्खों के मामलों को सुलझाने हेतु समय-समय पर वहां की सरकारों तथा प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने के लिए प्रयत्नशील रहती है। मुख्य सचिव ने जत्थेदार अवतार सिंघ की ओर से मिस्टर जेम्स गिल्बर्ट के साथ बातचीत करते हुए आस्ट्रेलिया में सिक्ख विद्यार्थियों को वीज़े सम्बंधी आती मुश्किलों, सिक्खों के धार्मिक मामलों, उन पर होती नसली टिप्पणियों तथा हमलों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम सरबत्त का भला चाहने वाली कौम है। सिक्ख जहां कहीं भी बसे हैं उन्होंने वहां के आर्थिक विकास में बहुमूल्य योगदान डाला है। सिक्खों ने विदेशों में बड़े-बड़े पद हासिल कर अपनी विलक्षण पहचान हासिल की है।

मिस्टर जेम्स गिल्बर्ट ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष को विश्वास दिलाते हुए कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा आस्ट्रेलिया में रहते सिक्ख समुदाय के बारे में उठाए गए मुद्दों पर वे आस्ट्रेलिया सरकार को सूचित करेंगे। उन्होंने कहा कि श्री हरिमंदर साहिब सांझीवालता का प्रतीक है तथा यहां आकर मन को विलक्षण आनंद का एहसास होता है और शांति मिलती है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने उनको श्री हरिमंदर साहिब का मॉडल, धार्मिक पुस्तकों का सेट, शाल तथा सिरोपा देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर स. मनजीत सिंघ सचिव, स. सतिंदर सिंघ निजी सहायक तथा स. गुरविंदर सिंघ हाज़िर थे।

*प्रिंटर व पब्लिशर स. दिलजीत सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : **01-05-2016***